▪ भाद्रपद कृष्णा - 10 ▪ संवत 2082 ▪ वर्ष - 21 ▪ अंक - 26 ▪ पृष्ठ - 8 ▪ रु. 5/- बेंगलूरु » सोमवार » 18-08-2025 ▪ www.dakshinbharat.com ▪ Email : news@dakshinbharat.com

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತ ರಾಷ್ಟ್ರಮತ | ಹಿಂದಿ ದಿನ ಪತ್ರಿಕೆ | बेंगलूरु और चेन्नई से एक साथ प्रकाशित

5 इलाज के लिए सुविधा और पैसे की कोई कमी नहीं : योगी आदित्यनाथ

6 देश विभाजन के दोषी कौन ?

7 निधि अग्रवाल बनीं टाइगर श्रॉफ की हीरोइन

फर्स्ट टेक

नेपाल में भूकंप के झटके महसूस किए गए

काठमांडू/भाषा। पूर्वी नेपाल के रामेछाप जिले में रविवार को 4.0 तीव्रता का भूकंप आया। हालांकि, भूकंप से किसी तरह के नुकसान की तत्काल कोई सूचना नहीं है। राष्ट्रीय भूकंप निगरानी एवं अनुसंधान केंद्र (एनईएमआरसी) के अनुसार, दोपहर तीन बजकर 43 मिनट पर आए इस भूकंप का केंद्र रामेछाप जिले के हेलाम्चो क्षेत्र में था जो काठमांडू से 150 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। भूकंप के झटके आसपास के जिलों दोलखा, सिन्धुली और कावरेपलांचोक में भी महसूस किए गए।

इंडिगो के विमान ने लैंडिंग टाली; पुनः उड़ान भरी

गुवाहाटी/भाषा। डिब्रूगढ़ से गुवाहाटी आ रहे इंडिगो का एक विमान रविवार को यहां लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई अंतरराष्ट्रीय (एलजीबीआई) हवाई अड्डे पर उतरने से कुछ सेकेंड पहले नीचे उतरना टालकर फिर से आसमान में उड़ गया। यह जानकारी अधिकारियों ने दी। एयरलाइन के एक सूत्र ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि इस कदम से एयरलाइन या किसी यात्री पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कंपनी के सूत्र ने कहा, ''यदि विमान के रनवे पर उतरने के दौरान पायलट को कोई समस्या आती है तो 'गो अराउंड' (विमान के उतरने को बीच में रोककर फिर से उड़ान भरना) एक सामान्य घटना है। वह यात्रियों की सुरक्षा के लिए विभिन्न कारणों से नीचे उतरने का दूसरा प्रयास करने का निर्णय ले सकता है और इसमें चिंता की कोई बात नहीं है।'' उन्होंने बताया कि दूसरे प्रयास में विमान गुवाहाटी के एलजीबीआई हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतर गया।

रूस की 2036 से पहले शुक्र ग्रह पर दोबारा जाने की योजना

व्लादिवोस्तोक/भाषा। रूस 2036 से पहले शुक्र ग्रह पर फिर से जाने के लिए अपने वेनेरा-डी अंतरग्रहीय मिशन के प्रक्षेपण की योजना बना रहा है और इसकी तैयारियां जोरों पर हैं। यह जानकारी स्थानीय मीडिया ने रविवार को दी। तास समाचार एजेंसी ने रूसी विज्ञान अकादमी के अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (आईकेआई) में ग्रह भौतिकी विभाग के प्रमुख ओलेग कोराबलेव के हवाले से कहा कि यह मिशन अब देश के नए राष्ट्रीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का हिस्सा है और मिशन पर प्रारंभिक डिजाइन का काम जनवरी 2026 में शुरू होगा। कोराबलेव ने कहा कि ड्राफ्ट डिजाइन चरण में दो वर्ष का समय लगने की संभावना है और रूसी अंतरिक्ष उद्योग उद्यम, लावोच्किन एसोसिएशन के सहयोग से तैयारियां शुरू हो चुकी है जिसमें प्रगति को सुव्यवस्थित करने के लिए कई समन्वय बैठकें भी शामिल हैं।

सूर्यास्त 18-08-2025 6:39 बजे	सूर्योदय 19-08-2025 6:08 बजे
BSE 80,597.66 (+57.75)	NSE 24,631.30 (+11.95)
सोना 10,637 रु. (24 कैरेट) प्रति ग्राम	चांदी 118,456 रु. प्रति किलो

मिशन मंडेला

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

epaper.dakshinbharat.com

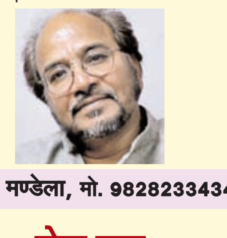

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

नेता गुण

नेता होते हैं बाजीगर,
मुद्दों से ध्यान बँटाने में।
होते हैं पूरे व्यापारिक,
रिश्तों को जोड़-घटाने में।
पूरे होते हैं क्रूर कुशल,
पथ कंटक दूर हटाने में।
जिस पर उनका दिल आ जाए,
पल लगता उसे पटाने में।।

निर्वाचन आयोग ने 'वोट चोरी' के आरोपों के लिए राहुल गांधी पर पलटवार करते हुए कहा

राहुल गांधी अपने आरोपों पर सात दिन में शपथपत्र जमा करें, वरना देश से माफी मांगें : सीईसी कुमार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। निर्वाचन आयोग के खिलाफ 'वोट चोरी' के आरोपों के लिए राहुल गांधी पर पलटवार करते हुए, मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार ने रविवार को कहा कि कांग्रेस नेता को मतदाता सूची में अनियमितताओं के अपने आरोपों पर सात दिन के भीतर शपथपत्र देना चाहिए, अन्यथा उनके 'वोट चोरी' के दावे ''निराधार और अमान्य'' माने जाएंगे।

गांधी द्वारा 2024 के लोकसभा चुनाव में 'वोट चोरी' के आरोप लगाने और कई विपक्षी नेताओं द्वारा बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे को उठाने के बाद अपनी पहली प्रेस वार्ता में मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा कि या तो गांधी माफी मांगें या चुनावी नियमों के तहत हस्ताक्षरित हलफनामे के साथ अपने दावों का समर्थन करें। उन्होंने कहा, ''हलफनामा दें या देश से माफी मांगें। तीसरा कोई विकल्प नहीं है। अगर सात दिन के भीतर शपथपत्र नहीं दिया जाता है, तो दावे निराधार और अमान्य माने जाएंगे।''

'वोट चोरी' का आरोप लगाते हुए, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने 31 जुलाई को एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान प्रस्तुति के माध्यम से 2024 के लोकसभा चुनाव के आंकड़ों का हवाला देते हुए दावा किया था कि कर्नाटक के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में एक लाख से अधिक वोट ''चोरी'' हुए थे।

एआई और डीपफेक असली चुनौतियां

नई दिल्ली/भाषा। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने रविवार को कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डीपफेक निर्वाचन आयोग के लिए वास्तविक चुनौती हैं तथा आयोग कानून के दायरे में रहकर इनसे निपटने की पूरी कोशिश करेगा। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि मशीन द्वारा पढ़ी जा सकने वाली मतदाता सूचियों से मतदाताओं की निजता भंग हो सकती है।

गांधी ने अन्य राज्यों में भी इसी तरह की अनियमितताओं का आरोप लगाया था। कई राज्यों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों ने गांधी से उनके दावों पर शपथपत्र दाखिल करने को कहा था।

चुनाव आयोग के अधिकारियों से मैं नहीं डरता : राहुल

औरंगाबाद/भाषा। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने रविवार को चुनाव आयोग के संवाददाता सम्मेलन के बाद आरोप लगाया कि आयोग पहले छुपकर वोट की चोरी कर रहा था लेकिन अब विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के नाम पर यह सरेआम हो रहा है। उन्होंने बिहार में वोटर अधिकार यात्रा के दौरान औरंगाबाद के रमेश चौक पर एक सभा को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि वह न तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से डरते हैं और न ही चुनाव आयोग से डरने वाले हैं।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि वर्ष 2023 में कानून में बदलाव करके मुख्य निर्वाचन आयुक्त और चुनाव आयुक्तों को कानूनी कार्रवाई के दायरे से मुक्त किया गया क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह नहीं चाहते कि वोट चोरी के कारण चुनाव आयोग पर किसी तरह की कार्रवाई हो।

कांग्रेस नेता ने कहा, प्रधानमंत्री (मोदी), अमित शाह और चुनाव आयोग के लोग जान लें कि मैं, तेजस्वी यादव और बिहार आपसे नहीं डरते। उन्होंने यह भी कहा कि चुनाव आयोग ने उनसे हलफनामा मांगा, लेकिन भाजपा नेता अनुराग ठाकुर से कोई हलफनामा नहीं मांगा।

सी.पी. राधाकृष्णन होंगे राजग के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार : नड्डा

नई दिल्ली/भाषा। महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार होंगे। इस आशय का फैसला रविवार शाम को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) संसदीय बोर्ड की बैठक में सर्वसम्मति लिया गया। बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा अध्यक्ष जे. पी. नड्डा, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तथा बोर्ड के अन्य सदस्य मौजूद थे। बैठक के बाद नड्डा ने पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बताया कि राधाकृष्णन को सर्व सम्मति से राजग का उम्मीदवार चुना गया है।

उन्होंने बताया कि इस संबंध में राजग में शामिल अन्य दलों से भी चर्चा हो गयी है और विपक्षी दलों से भी चर्चा की जाएगी। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि उपराष्ट्रपति निर्विरोध चुने जाएं। उन्होंने सभी सांसदों से राधाकृष्णन को समर्थन देने की अपील की।

नकली कीटनाशक बनाने वाली कंपनियों के खिलाफ चलेगा देशव्यापी अभियान : शिवराज

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

भोपाल/भाषा। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को रायसेन जिले में सोयाबीन के खेतों का निरीक्षण करने के बाद नकली कीटनाशक और खाद-बीज बनाने वाली कंपनियों के खिलाफ देशव्यापी अभियान शुरू किए जाने की घोषणा की।

खरपतवारनाशक दवा डालने से किसानों की सोयाबीन की फसल पूरी तरह से नष्ट हो जाने की शिकायत मिलने के बाद चौहान ने ज़िले के छीरखेड़ा गांव में सोयाबीन के खेतों का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने किसानों की जली फसल देख नाराजगी जताई और किसानों को दोषी कंपनियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया। चौहान ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा, यह समस्या सिर्फ एक खेत तक सीमित नहीं है, बल्कि कई किसानों ने ऐसी शिकायतें की हैं।

कृषि मंत्री ने कहा कि इस मामले की जांच के लिए वैज्ञानिकों का एक उच्चस्तरीय दल प्रभावित खेतों का निरीक्षण करेगा और जांच कर दोषी कंपनी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

चौहान के निर्देश पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने तत्काल जांच समिति गठित कर दी। आईसीएआर के खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्रा को इस समिति का अध्यक्ष बनाया गया है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि किसानों को राहत जरूर मिलेगी और इसकी जिम्मेदारी कंपनी की होगी। उन्होंने किसानों को पूरा न्याय का भरोसा दिलाया और कहा कि नकली कीटनाशक, खाद-बीज बनाने वाली कंपनियों के खिलाफ पूरे देश में व्यापक अभियान चलाया जाएगा।

भारत लौटे शुभांशु शुक्ला, हुआ जोरदार स्वागत

नई दिल्ली/भाषा। अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला का अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) की अपनी ऐतिहासिक यात्रा के बाद रविवार तड़के भारत लौटने पर जोरदार स्वागत किया गया। यहां हवाई अड्डे पर बड़ी संख्या में लोगों ने तिरंगा लहराते हुए और ढोल बजाते हुए शुक्ला का भव्य स्वागत किया। शुक्ला का हवाई अड्डे पर केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने स्वागत किया।

संविधान के झंडाबरदार ही देते रहे बाबा साहब की भावनाओं को दगा : मोदी

■ प्रधानमंत्री मोदी ने राजधानी में 11 हजार करोड़ रुपए की राष्ट्रीय महत्व की विभिन्न राजमार्ग परियोजनाओं का उद्घाटन किया।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस का नाम लिये बिना उस पर परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए रविवार को कहा कि संविधान के झंडाबरदार बनने वाले कुछ लोगों ने किस तरह से संविधान को कुचला है उसे सुनकर लोग सन्न रह जायेंगे जबकि उनकी सरकार पिछली सरकारों की गलतियों को सुधारने में लगी है।

मोदी राजधानी में 11 हजार करोड़ रुपये की राष्ट्रीय महत्व की विभिन्न राजमार्ग परियोजनाओं का उद्घाटन करने के बाद एक सभा को संबोधित कर रहे थे।

प्रधानमंत्री ने कांग्रेस और उसके नेता राहुल गांधी के भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर संविधान की अवेहलना करने के आरोपों का उनका नाम लिये बिना करारा जवाब दिया। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय और संविधान की बात करने वाले लोगों ने ही बाबा साहब की भावनाओं को दगा दिया।

उन्होंने कहा, ये लोग जो सर पर संविधान रखकर नाचते हैं ना, वो संविधान को कैसे कुचलते थे, वे बाबा साहब की भावनाओं को कैसे दगा देते थे थे, मैं आज वो सच्चाई आपको बताने जा रहा हूं। मैं कहता हूं आप यह सुनकर सन्न रह जाएंगे।

मोदी ने कहा कि दिल्ली में सफाईकर्मियों के लिए ऐसे कानून बना रखे थे कि यदि कोई सफाईकर्मी एक दिन काम पर नहीं आता था तो उसे एक महीने के लिए जेल में डाला जा सकता था। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने इन कानूनों को समाप्त कर दिया है।

प्रधानमंत्री ने कहा , मेरे सफाई कर्मी भाई बहन जो दिल्ली में काम करते हैं । उनके लिए एक खतरनाक कानून था इस देश में। दिल्ली नगर निगम अधिनियम में एक बात लिखी थी कि यदि कोई सफाई कर्मी मित्र बिना बताए एक दिन काम पर नहीं आता तो उसे एक महीने के लिए जेल में डाला जा सकता था। आप बताइए, खुद सोचिए कि सफाई कर्मियों को लोग क्या समझते थे। क्या आप उन्हें जेल में डाल देंगे वह भी एक छोटी सी गलती के कारण। आज जो सामाजिक न्याय की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, उन्होंने ऐसे कई नियम कानून देश में बने हुए रखे थे। यह मोदी है जो इस तरह के गलत कानून को खोज खोज कर के खत्म कर रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा पिछली सरकारों ने दिल्ली को गड्ढे में गिरा दिया था। दिल्ली को उस गर्त से निकालने और विकास के धरातल पर आगे बढाने के कठिन काम को भाजपा सरकार पूरा करेगी। उन्होंने कहा कि दिल्ली और आसपास के सभी राज्यों में भाजपा की सरकारें है और इसलिए एनसीआर का विकास करना हमारा दायित्व है।

ट्रंप और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की की बैठक में यूरोपीय नेता शामिल होंगे

कीव/एपी। यूरोपीय देशों और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के नेताओं ने रविवार को घोषणा की कि वे यूक्रेन-रूस के युद्ध को समाप्त करने के लिए राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच होने वाली महत्वपूर्ण बैठक में शामिल होंगे। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ शुक्रवार को ट्रंप की शिखर बैठक में यूक्रेनी नेता को शामिल न किए जाने के बाद फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी के नेता उनके समर्थन में एकजुट हो रहे हैं।

सोमवार को व्हाइट हाउस में होने वाली महत्वपूर्ण बैठक के संबंध में यह कदम फरवरी में ट्रंप से मुलाकात के दौरान जेलेंस्की के साथ हुई तीखी झड़प की पुनरावृत्ति को रोकने का एक स्पष्ट प्रयास है। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''राष्ट्रपति जेलेंस्की के अनुरोध पर, मैं कल व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति ट्रंप और अन्य यूरोपीय नेताओं के साथ बैठक में शामिल होऊंगी।'' संयुक्त राष्ट्र में फ्रांस के सैन्य मिशन के पूर्व प्रमुख फ्रांसीसी जनरल (सेवानिवृत्त) डोमिनिक ट्रिनक्वांड ने कहा, ''यूरोपीय लोग ओवल ऑफिस (अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय) वाली घटना के दोहराए जाने से बहुत भयभीत हैं और इसलिए वे जेलेंस्की का पूरा समर्थन करना चाहते हैं।'' रविवार को एक के बाद एक कई यूरोपीय नेताओं ने भी घोषणा की कि वे अमेरिका जा रहे हैं। इनमें फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज और नाटो सैन्य गठबंधन के महासचिव मार्क रूट शामिल हैं।

अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने रविवार को एनबीसी के 'मीट द प्रेस' कार्यक्रम में कहा कि संभावित युद्ध-विराम ''संभवतः विचाराधीन'' है, लेकिन युद्ध को समाप्त करने का सबसे अच्छा तरीका ''पूर्ण शांति समझौता'' होगा।

अलास्का सम्मेलन

ट्रंप-पुतिन बैठक में कोई समझौता नहीं हुआ, लेकिन युद्धविराम के प्रयास जारी

■ रूस ने रातोंरात यूक्रेनी शहरों पर नए हमले शुरू कर दिए, जिनमें 300 से अधिक ड्रोन और 30 मिसाइल शामिल थीं।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लंदन/द कन्वरसेशन। अलास्का में रूस के नेता व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात से कुछ घंटे पहले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि वह यूक्रेन में युद्धविराम देखना चाहते हैं और यदि आज इस पर सहमति नहीं बनी तो वह ''खुश नहीं होंगे''। ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति अलास्का से बिना किसी समझौते के ही वापस लौट आए हैं।

ट्रंप ने संवाददाताओं से कहा, हम वहां तक नहीं पहुंचे'' और बाद में अस्पष्ट रूप से कहा कि उन्होंने और पुतिन ने ''बहुत प्रगति की है''।

ट्रंप द्वारा आगामी सप्ताहों और महीनों में पुतिन के साथ बातचीत करने के सुझाव पर पुनः विचार किए जाने की संभावना है तथा रूसी नेता ने कहा है कि उनकी अगली बैठक मॉस्को में हो सकती है।

शिखर सम्मेलन के बाद 'फॉक्स न्यूज' के साथ एक साक्षात्कार में जब ट्रंप से पूछा गया कि यूक्रेन में युद्ध कैसे समाप्त हो सकता है और क्या भूमि की अदला-बदली होगी, तो ट्रंप ने कहा: ''ये वे बिंदु हैं जिन पर हम काफी हद तक सहमत हैं''।

यूक्रेन से क्षेत्रीय रियायतें हासिल करना लंबे समय से शांति समझौते पर किसी भी वार्ता के लिए मॉस्को की पूर्व शर्तों में से एक रहा है। पुतिन शायद यह दांव लगा रहे हैं कि यूक्रेन पर लगातार सैन्य दबाव बनाए रखते हुए इन रियायतों पर जोर देना उनके लिए फायदेमंद होगा। यूक्रेन में युद्ध को लेकर जनता में बेचैनी बढ़ रही है और पुतिन उम्मीद कर रहे होंगे कि थकी हुई जनता अंततः इस समझौते को स्वीकार्य और आकर्षक भी मानेगी।

रूस ने रातोंरात यूक्रेनी शहरों पर नए हमले शुरू कर दिए, जिनमें 300 से अधिक ड्रोन और 30 मिसाइल शामिल थीं।

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की, जिन्हें अलास्का शिखर सम्मेलन से बाहर रखा गया था, ने कहा है कि कीव क्षेत्रीय रियायतों पर सहमत नहीं होगा।

ऐसा कदम यूक्रेन के संविधान के तहत अवैध होगा, जिसमें देश की क्षेत्रीय सीमाओं में परिवर्तन को मंजूरी देने के लिए राष्ट्रव्यापी जनमत संग्रह की आवश्यकता होती है।

यूट्यूबर एल्विश यादव के गुरुग्राम स्थित घर के बाहर गोलीबारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

गुरुग्राम/भाषा। यूट्यूबर एल्विश यादव के गुरुग्राम सेक्टर 57 में स्थित आवास के बाहर रविवार सुबह दो नकाबपोश हमलावरों ने दो दर्जन से अधिक गोलियां चलाईं। पुलिस ने यह जानकारी दी।

यह घटना सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई, जिसमें दो बाइक सवार नकाबपोश बदमाश घर के बाहर आते और दूर से गोलियां चलाते दिखाई दे रहे हैं। कुछ सेकंड बाद, उनमें से एक मुख्य द्वार पर झुका और गोलियां चलाता रहा, फिर दोनों भाग गए।

पुलिस ने बताया कि घटना सुबह करीब साढ़े पांच बजे हुई और उस वक्त यादव घर पर नहीं थे हालांकि उनके परिवार के कुछ सदस्य घर में थे लेकिन हमले में कोई हताहत नहीं हुआ।

इस बीच, भाऊ गिरोह' ने गोलीबारी की जिम्मेदारी ली है।

सूचना मिलने के बाद पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची और फॉरेंसिक साक्ष्य एकत्र किए। पुलिस टीम इलाके की सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रही है।

पिंजरापोल गौशाला में कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

मैसूरु। शहर के चामुंडी पहाड़ी की तलहटी स्थित मैसूरु पिंजरापोल सोसाइटी परिसर में शनिवार रात को कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाते हुए रात्रि भजन संध्या का आयोजन रामपुरा मठ (जागीर) के मठाधीश महंत रूपपुरी के सान्निध्य में रखा गया। सोसाइटी में स्थापित कृष्ण भगवान के मंदिर की विशेष सजावट कर विधिवत्त पूजा अर्चना कर ज्योत प्रज्वलित की गई।

भजन कलाकार जेठूसिंह राठौड़ ने भजनों की प्रस्तुति दी।पिंजरापोल के पदाधिकारियों की ओर से संत का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सोसायटी के अध्यक्ष सुमतिलाल पगारिया, उपाध्यक्ष विनोद बाकलीवाल, सचिव विनोद खाबिया, सहसचिव सुरेंद्र जैन सहित बड़ी संख्या में सदस्य उपस्थित थे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी — दक्षिण भारत राष्ट्रमत

केंगेरी स्थित प्रभु पाद गौशाला में कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। गौशाला के प्रमुख आनंद कृष्ण दास ने कृष्ण महिमा का वर्णन किया। इस अवसर पर अतिथि के तौर पर महेंद्र-सुरक्षा मुणोत उपस्थित हुए जिन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण का गायों के प्रति प्रेम मानवता के लिए एक प्रेरणा है। जन्माष्टमी के मौके पर बड़ी संख्या में छोटे बच्चे भगवान कृष्ण की वेशभूषा में इस कार्यक्रम में शामिल हुए। विजेता प्रतिभागियों को आनंदकृष्ण दास और महेंद्र मुणोत ने पुरस्कृत किया।

हर एक आत्मा में परमात्मा का निवास है : डॉ वरुणमुनि

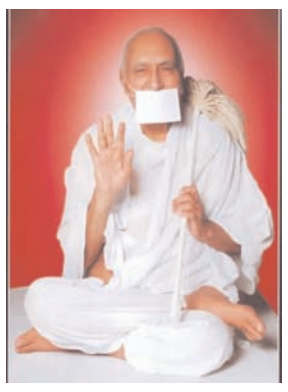

बेंगलूरु/दक्षिण भारत । शहर के गांधीनगर गुजराती जैन संघ में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय उपप्रवर्तक पंकजमुनिजी की निश्रा में डॉ वरुणमुनिजी ने कहा कि दीन, दुखी और पीड़ित प्राणियों की अनदेखी करना साक्षात धर्म और परमात्मा का अपमान करने के समान है। हर एक आत्मा में परमात्मा का निवास माना गया है। उसकी सेवा में समर्पित होना चार धामों की यात्रा करने के बराबर है। हर एक धार्मिक स्थान सेवा का केंद्र बने।

उन्होंने कहा कि अहिंसा, दया और तपस्या सभी धर्मों से श्रेष्ठ धर्म है, सेवा धर्म सबसे कठिन है। सभी धर्मों की उपासना पद्धति अलग-अलग हो सकती है, परंतु सेवा को सभी धर्मों ने पहला स्थान दिया है। उन्होंने बताया कि यदि कोई प्राणी तड़प रहा हो और हम मौन दर्शक बने रहें, तो यह मनुष्य को धार्मिकता का पात्र नहीं बनने देता। सेवा और सहयोग धर्म के दो स्तंभ हैं। इनके बिना धर्म अधूरा है। उन्होंने कहा कि धर्म कोई भी हो, हर धर्म प्रेम, मानवता और सेवा की बात करता है, लेकिन लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण धर्म को अलग-अलग ढंग से परिभाषित कर दिया है। जैन दर्शन हमारी जीवनशैली को बदलने का एक श्रेष्ठ दर्शन है। जिन्होंने अपनी आत्मा को जीत लिया है उन्हें जिनेंद्र कहा जाता है।

कार्यस्थल पर 'डराने-धमकाने' से कर्मचारियों की रचनात्मक सोच बाधित होती है: आईआईएम अध्ययन

नई दिल्ली/भाषा। कार्यस्थल पर 'डराने-धमकाने' और नकारात्मक व्यवहार के चलते कर्मचारियों की रचनात्मक सोच में बाधा पड़ती है और उनके नवाचार में सहायक परियोजनाओं में शामिल होने की संभावना कम हो जाती है। भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम), लखनऊ के एक अध्ययन में यह बात कही गई।

ऐसे नकारात्मक व्यवहार में बहिष्कृत किया जाना, अपमानित किया जाना या अनुचित बर्ताव शामिल है। कई संगठनों में कर्मचारी प्रबंधन की जानकारी के बिना गोपनीय रूप से स्व-प्रेरित विचारों पर काम करते हैं और जब वे व्यावसायिक सफलता के लिए तैयार हो जाते हैं, तब उस बारे में प्रबंधन को बताते हैं। अधिकारियों के अनुसार, शोधकर्ताओं ने जरूरी आंकड़े जमा करने के लिए मिश्रित-विधि का उपयोग किया। शोध के तहत 112 प्रतिभागियों से सुझाव लिए गए।

प्रधानमंत्री मोदी ने दिल्ली में 11,000 करोड़ रुपए की लागत वाले दो राजमार्गों का उद्घाटन किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को राष्ट्रीय राजधानी और उसके आसपास के इलाकों में यातायात की भीड़ कम करने के उद्देश्य से लगभग 11,000 करोड़ रुपए की लागत से बने द्वारका एक्सप्रेसवे के दिल्ली खंड और शहरी विस्तार मार्ग-दो (यूईआर-दो) का उद्घाटन किया।

ये दोनों मार्ग राष्ट्रीय राजधानी में यातायात की भीड़ कम करने की सरकार की व्यापक योजना के तहत बनाए गए हैं। इनका उद्देश्य दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में कनेक्टिविटी में सुधार, यात्रा समय में कटौती और यातायात के दबाव को कम करना है। इन मार्गों के पूरी तरह से चालू होने पर सोनीपत, रोहतक, बहादुरगढ़ और गुरुग्राम से इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे तक यात्रा के समय में उल्लेखनीय कमी आने की उम्मीद है।

मोदी ने उद्घाटन करने के बाद कहा, द्वारका एक्सप्रेसवे और यूईआर-दो से दिल्ली-एनसीआर के लोगों को लाभ होगा... सरकार दिल्ली के लोगों की सभी परेशानियों को दूर करने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा, द्वारका एक्सप्रेसवे और शहरी विस्तार मार्ग का निर्माण असाधारण रूप से अच्छा हुआ है। पेरिफेरल एक्सप्रेसवे के विकास के बाद, शहरी विस्तार मार्ग अब दिल्ली को महत्वपूर्ण लाभ पहुंचाने के लिए तैयार है। मोदी ने बताया कि शहरी विस्तार मार्ग की खासियत यह है कि इसने शहर में कचरे की बढ़ती समस्या के समाधान में अद्वितीय योगदान दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा, इसके निर्माण के लिए लाखों टन कचरे का वैज्ञानिक और टिकाऊ तरीके से इस्तेमाल किया गया है। इस अभिनव दृष्टिकोण ने न केवल कचरे के विशाल ढेरों को कम किया है, बल्कि कचरे को बुनियादी ढांचे के विकास के लिए एक मूल्यवान संसाधन में भी बदल दिया है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार लोगों के जीवन को आसान बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। मोदी ने कहा कि यह प्रतिबद्धता पार्टी की नीतियों और निर्णयों में परिलक्षित होती है।

एथनॉल के पानी के संपर्क से होती है समस्या, पेट्रोल पंप पर भूमिगत टैंक पूरी तरह सील हों : विशेषज्ञ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। एथनॉल मिश्रित पेट्रोल के उपयोग से वाहनों में 'माइलेज' और अन्य समस्याओं को लेकर चर्चा के बीच क्षेत्र से जुड़े लोगों का कहना है कि इस ईंधन के जल में घुलनशील होने की विशेषता के कारण गाड़ियों में दिक्कतें आ सकती हैं। इससे निपटने के लिए अन्य बातों के अलावा पेट्रोल पंप पर स्थित भूमिगत ईंधन टैंक को पूरी तरह से सील करने की जरूरत है।

उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ समय से सोशल मीडिया पर कई वाहन मालिकों ने पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रित ईंधन को लेकर गाड़ियों को हो रहे नुकसान के बारे में लिखा है। बड़ी संख्या में आये ऐसे पोस्ट में कुछ लोगों ने कहा है कि इसके इस्तेमाल से वाहन के माइलेज में करीब सात प्रतिशत की गिरावट आई है जबकि कुछ लोगों ने इससे ई-10 वाहनों में रबड़, धातु कलपुर्जों के जल्द खराब होने की आशंका जताई है।

हालंकि पेट्रोलियम मंत्रालय ने इन बातों को सिरे से खारिज करते हुए पिछले सप्ताह बयान में कहा कि गन्ना या मक्का से निकाले गए 20 प्रतिशत एथनॉल और 80 प्रतिशत पेट्रोल के मिश्रण के राष्ट्रीय कार्यक्रम का उद्देश्य प्रदूषण कम करना और किसानों की आय बढ़ाना है।

ऑल इंडिया पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय बंसल ने कहा कि एथनॉल ईंधन का एक अच्छा विकल्प है लेकिन पानी में घुलनशील होने की इसकी विशेषता के कारण गाड़ियों में कुछ समस्याएं आ सकती हैं। उन्होंने पीटीआई-भाषा से कहा, जितने भी हमारे पेट्रोल पंप हैं, उनमें सब में अंडरग्रांउड टैंक हैं। टैंक में पानी नहीं जाए, उसके लिए उसे बेहतर तरीके से सील करना जरूरी है। पेट्रोल और डीजल टैंक में पानी जाने पर वह नीचे चला जाता है।

एथनॉल मिश्रण वाले पेट्रोल में जितना एथनॉल है, अगर उसमें पानी आता है तो वह भी पानी बन जाता है। और अगर यह ईंधन गाड़ियों में जाएगा तो समस्याएं हो सकती है। वाहन बनाने वाली कंपनी टोयोटा किर्लोस्कर मोटर प्राइवेट लि. ने कहा कि एथनॉल की जो विशेषताएं हैं, उसको देखते हुए, ई-20 (20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रित पेट्रोल) के उपयोग से 'फ्यूल इकनॉमी' यानी माइलेज में थोड़ा-बहुत अंतर हो सकता है। परीक्षण एजेंसियों ने इसकी पुष्टि की है। इस बारे में वाहन कंपनियों के निकाय सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स (सियाम) ने कुछ भी कहने से इनकार कर दिया।

मोदी ने राज्यों से प्रस्तावित जीएसटी सुधारों को लागू करने में सहयोग का आग्रह किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि केंद्र ने अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों का मसौदा राज्यों को दे दिया है और दिवाली से पहले प्रस्ताव को लागू करने के लिए उनका सहयोग मांगा गया है। उन्होंने कहा कि माल एवं सेवा कर (जीएसटी) में सुधार से गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों के साथ ही छोटे और बड़े व्यवसायों को भी लाभ होगा। प्रधानमंत्री ने दो एक्सप्रेसवे के उद्घाटन के बाद यहां एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि केंद्र जीएसटी कानून को सरल बनाने और कर दरों में संशोधन करने का इरादा रखता है।

मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण में जीएसटी कानून में सुधार के प्रस्ताव की घोषणा की थी। उन्होंने कहा, हमारे लिए सुधार का अर्थ सुशासन को आगे बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि सरकार लगातार सुधार करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। प्रधानमंत्री ने कहा, आने वाले महीनों में हम कई बड़े सुधार करने जा रहे हैं, ताकि लोगों का जीवन और व्यवसाय करना आसान हो जाए। केंद्र जीएसटी में ''अगली पीढ़ी का सुधार'' ला रहा है। उन्होंने कहा, इस दिवाली लोगों को जीएसटी सुधार से दोहरा बोनस मिलेगा। मोदी ने कहा कि केंद्र ने जीएसटी में सुधार के प्रस्ताव का मसौदा राज्यों को भेज दिया है। उन्होंने कहा, मुझे उम्मीद है कि सभी राज्य केंद्र सरकार की पहल में सहयोग करेंगे। उन्होंने राज्यों से इस प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूरा करने का आग्रह किया, ताकि दिवाली का त्योहार और भी शानदार हो। उन्होंने कहा कि इस सुधार का मकसद जीएसटी को सरल बनाना और दरों में संशोधन करना है।

सरकार वकीलों की सुरक्षा के लिए कानून लाने के पक्ष में: फडणवीस

कोल्हापुर/भाषा। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि उनकी सरकार वकीलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कानून लाने के पक्ष में है और इस संबंध में उचित निर्णय लिया जाएगा। मुख्यमंत्री कोल्हापुर में मुंबई उच्च न्यायालय की पीठ के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस पीठ का उद्घाटन प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई ने किया।

फडणवीस ने कहा कि वकीलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कानून की मांग की जा रही है और उनकी सरकार ऐसे कानून की आवश्यकता के प्रति सकारात्मक है। उन्होंने कहा कि सरकार राज्य में अदालतों के बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण और उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि आम आदमी को शीघ्र न्याय मिल सके। फडणवीस ने कहा कि कोल्हापुर में उच्च न्यायालय की पीठ स्थापित करने के लिए लोग 50 साल से संघर्ष कर रहे थे, जिसका आज सुखद अंत हुआ है।

सैमसंग ने भारत में लैपटॉप का विनिर्माण शुरू किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। दक्षिण कोरिया की इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी सैमसंग ने भारत में ग्रेटर नोएडा स्थित अपने कारखाने में लैपटॉप बनाना शुरू कर दिया है। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों ने यह जानकारी दी।

कंपनी पहले से ही ग्रेटर नोएडा स्थित अपने कारखाने में मोबाइल फोन, स्मार्टवॉच और टैबलेट बना रही थी। अब इसमें लैपटॉप भी शामिल हो गया है।

एक सूत्र ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया, सैमसंग ने अपने विनिर्माण पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। कंपनी ने ग्रेटर नोएडा स्थित कारखाने में लैपटॉप बनाना शुरू कर दिया है। सैमसंग की योजना भारत में और भी कई उपकरण बनाने की है।

सैमसंग को भेजे गए ईमेल का कोई उत्तर नहीं मिला।

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को सैमसंग के बड़े अधिकारियों से मुलाकात के बाद कहा था कि सैमसंग भारत में अपनी प्रतिभा और नवोन्मेषण के जरिये आधुनिक प्रौद्योगिकी वाले उपकरणों का विनिर्माण बढ़ा रही है।

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सैमसंग दक्षिण-पश्चिम एशिया के अध्यक्ष और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) जेबी पार्क और सैमसंग दक्षिण-पश्चिम एशिया के कॉरपोरेट उपाध्यक्ष एस पी चुन के साथ बैठक के बाद शनिवार को कहा, सैमसंग भारत में अपने उन्नत प्रौद्योगिकी उपकरणों के विनिर्माण का विस्तार जारी रखे हुए है।

काउंटरपॉइंट रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार, सैमसंग मूल्य और मात्रा के हिसाब से भारत की दूसरी सबसे बड़ी स्मार्टफोन कंपनी है। हालांकि, लैपटॉप खंड में यह खास पहुंच नहीं बना पाई है। साइबरमीडिया रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार, सैमसंग टैबलेट पीसी खंड में 15 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ दूसरे नंबर पर है।

संवैधानिक वैधता का मतलब वांछनीयता नहीं है : पूर्व प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। भारत के पूर्व प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना ने एक साथ चुनाव कराने संबंधी विधेयक की समीक्षा कर रही संसदीय समिति से कहा है कि किसी प्रस्ताव की संवैधानिक वैधता यह नहीं दर्शाती कि उसके प्रावधान वांछनीय या आवश्यक भी हैं। सूत्रों ने यह जानकारी दी।

न्यायमूर्ति खन्ना ने स्पष्ट किया कि किसी प्रस्ताव को संविधान के अनुरूप मान लेने का यह अर्थ नहीं है कि वह समाज या लोकतंत्र के लिहाज से उचित या जरूरी भी है।

सूत्रों के मुताबिक, हालांकि समिति को दिए अपने लिखित मत में न्यायमूर्ति खन्ना ने कहा कि संविधान संशोधन विधेयक के बारे में देश के संघीय ढांचे को कमजोर करने संबंधी तर्क उठाए जा सकते हैं। उन्होंने इस अवधारणा के समर्थन और आलोचना में किए गए विभिन्न दावों को सूचीबद्ध भी किया।

भाजपा सांसद पी पी चौधरी की अध्यक्षता वाली संसदीय समिति के साथ अपने विचार साझा करने वाले अधिकांश विशेषज्ञों ने इस आरोप को खारिज कर दिया कि प्रस्ताव असंवैधानिक हैं, लेकिन उन्होंने विधेयक के वर्तमान प्रावधानों के साथ कुछ मुद्दों को उठाया है। न्यायमूर्ति खन्ना संसदीय समिति के साथ मंगलवार को बातचीत करने वाले हैं। न्यायमूर्ति खन्ना भारत के कुछ अन्य पूर्व मुख्य न्यायाधीशों के साथ मिलकर विधेयक में निर्वाचन आयोग को दी गई शक्तियों की सीमा पर चिंता जता रहे हैं। उन्होंने संसद की समिति को बताया कि प्रस्तावित विधेयक निर्वाचन आयोग को यह तय करने के मामले में 'असीमित विवेकाधिकार' देता है कि किसी राज्य विधानसभा का चुनाव लोकसभा चुनाव के साथ नहीं कराया जा सकता। साथ ही, इस संबंध में राष्ट्रपति को सिफारिश करने का अधिकार भी आयोग को दिया गया है। न्यायमूर्ति खन्ना ने यह संकेत दिया कि इस प्रकार का असीमित अधिकार किसी एक संस्था को देना संतुलित लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दृष्टिकोण से चिंताजनक हो सकता है। पूर्व प्रधान न्यायाधीश ने समिति से कहा, यह खंड मनमाना होने और संविधान के अनुच्छेद-14 का उल्लंघन करने के आधार पर संविधान के मूल ढांचे का उल्लंघन करने तथा उस पर हमला करने के कारण प्रश्नगत होगा।

संविधान का अनुच्छेद-14 कानून के समक्ष समानता से संबंधित है। पूर्व प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना ने संसद की समिति को आगाह किया कि यदि निर्वाचन आयोग किसी राज्य में चुनाव स्थगित करता है, तो इसका परिणाम अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रपति शासन के रूप में हो सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इससे केंद्र सरकार राज्य सरकार के कार्यों का नियंत्रण संभाल सकती है। उन्होंने कहा कि यह स्थिति न्यायिक दृष्टि से सवालों के घेरे में आ सकती है, क्योंकि यह संविधान द्वारा कल्पित संघीय ढांचे का उल्लंघन मानी जा सकती है।

हिमाचल में भारी बारिश के बाद मंडी में अचानक बाढ़, कीरतपुर-मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग अवरुद्ध

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

शिमला/भाषा। हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में भारी बारिश के कारण भूस्खलन और अचानक बाढ़ आ गई जिससे मलबा पनारसा, टकोली और नागवैन इलाकों में कई घरों में घुस गया।

अचानक आयी बाढ़ में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। जिले में कई जगहों पर बचाव अभियान जारी है। प्रभावित इलाकों में टीम तैनात कर दी गई हैं और लोगों को नदियों और नालों से दूर रहने की सलाह दी गई है।

चार लेन वाला कीरतपुर-मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग जलभराव के कारण अवरुद्ध है। शनिवार रात से हो रही मूसलाधार बारिश के कारण जिले के कई नाले उफान पर हैं। जोगनी माता मंदिर के निकट भारी भूस्खलन हुआ, जिसके कारण वाहनों का आवागमन बाधित हो गया, जिससे यात्रियों को काफी असुविधा हुई।

शालनाल नदी के उफान पर होने के कारण अचानक आयी बाढ़ के कारण एक निजी कार्यालय की चारदीवारी ढह गई। हालांकि, इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है और कर्मचारी इसमें बाल-बाल बच गए। आस-पास के निवासियों के घरों को भी काफी नुकसान पहुंचा है।

'भाजपा का अंग' बनकर काम कर रहा निर्वाचन आयोग 'वोट चोरी' पर जवाब दे : दिग्विजय सिंह

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

इंदौर (मध्यप्रदेश)/भाषा। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह ने निर्वाचन आयोग पर हमला बोलते हुए रविवार को आरोप लगाया कि आयोग सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का अंग बनकर काम कर रहा है।

मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि आयोग आरोप-प्रत्यारोप में पड़ने के बजाय कथित 'वोट चोरी' को लेकर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और विपक्षी दलों के अन्य नेताओं के सवालों के जवाब दे। सिंह ने आयोग के रविवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए यह बात कही। प्रेस सम्मेलन में मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को मतदाता सूची में अनियमितताओं के अपने आरोपों पर सात दिन के भीतर शपथपत्र देना चाहिए, अन्यथा उनके 'वोट चोरी' के दावे 'निराधार और अमान्य' माने जाएंगे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सिंह ने इंदौर में एक पुस्तक के विमोचन के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा, ''निर्वाचन आयोग आज पूरी तरह भाजपा का एक अंग बनकर काम कर रहा है। लोकतंत्र को बचाने के लिए आवश्यकता है कि हम इस बात को हर मतदान केंद्र पर साबित करें और निष्पक्ष चुनावों के लिए मिलकर काम करें। सिंह ने महाराष्ट्र और देश के अन्य राज्यों में फर्जी मतदाताओं को पंजीकृत किए जाने का आरोप लगाया और कहा कि 'सफल लोकतंत्र' के लिए 'निष्पक्ष चुनाव' आवश्यक हैं। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी ने प्रमाणित कर दिया है कि पूरे देश में किस तरह से 'वोट चोरी' हो रही है।

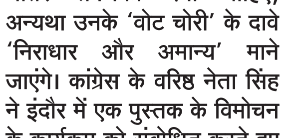

कार्यक्रम के बाद सिंह ने संवाददाताओं के साथ बातचीत में कहा कि निर्वाचन आयोग आरोप-प्रत्यारोप में पड़ने के बजाय कथित 'वोट चोरी' को लेकर गांधी और विपक्षी दलों के अन्य नेताओं के सवालों के जवाब दे। उन्होंने निर्वाचन आयोग के संवाददाता सम्मेलन पर निशाना साधते हुए कहा,''निर्वाचन आयोग संवाददाता सम्मेलन में आरोप लगाने के बजाय वोट चोरी को लेकर गांधी के प्रस्तुत तथ्यों का उत्तर दे।

दो-राष्ट्र की अवधारणा सबसे पहले सावरकर ने रखी थी : प्रियंक खरगे

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक के मंत्री प्रियंक खरगे ने दावा किया है कि भारत में दो राष्ट्रों की अवधारणा सबसे पहले विनायक दामोदर सावरकर ने रखी थी, जबकि बाद में मुहम्मद अली जिन्ना और मुस्लिम लीग ने इसे अपनाया था। कर्नाटक के सूचना प्रौद्योगिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी मंत्री प्रियंक खरगे ने एक्स' पर पोस्ट किया, दो राष्ट्रों का विचार सबसे पहले 'वीर' सावरकर ने रखा था और उनके 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' ने इसका समर्थन किया था। उन्होंने सावरकर के लेखों और भाषणों का हवाला देते हुए घटनाक्रम का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, 'एसेंशियल्स ऑफ हिंदुत्व' (1922 में लिखी) में सावरकर ने हिंदुत्व को धर्म से नहीं, बल्कि मातृभूमि से परिभाषित किया है, भारत को 'पितृभूमि और पवित्रभूमि' दोनों के रूप में परिभाषित किया है।'' खरगे ने कहा कि सावरकर ने 1937 में अहमदाबाद में हिंदू महासभा के 19वें अधिवेशन के दौरान कहा था, 'भारत में दो विरोधी राष्ट्र साथ-साथ रह रहे हैं। आज भारत को एकात्मक और समरूप राष्ट्र नहीं माना जा सकता। इसके विपरीत, भारत में मुख्य रूप से दो राष्ट्र हैं: हिंदू और मुसलमान।' उन्होंने सावरकर की 1943 में नागपुर में की गई टिप्पणी का हवाला दिया जिसमें कहा गया है, ''मेरा श्री जिन्ना के दो-राष्ट्र सिद्धांत से कोई झगड़ा नहीं है। हम, हिंदू, अपने आप में एक राष्ट्र हैं और यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हिंदू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं।''

यह सवाल उठाते हुए कि क्या भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इस इतिहास को स्वीकार करती है, खरगे ने बी आर आंबेडकर की टिप्पणी को उद्धृत किया जिसमें कहा गया है, यह अजीब लग सकता है, लेकिन श्री सावरकर और श्री जिन्ना एक राष्ट्र बनाम दो राष्ट्र के मुद्दे पर एक-दूसरे के विरोधी होने के बजाय इस बारे में पूरी तरह सहमत थे। दोनों न केवल सहमत थे, बल्कि इस बात पर जोर दिया कि भारत में दो राष्ट्र हैं - एक मुस्लिम राष्ट्र और दूसरा हिंदू राष्ट्र। वे केवल उन नियमों और शर्तों के संबंध में भिन्न थे, जिनके आधार पर दोनों राष्ट्रों को रहना चाहिए।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बेटे प्रियंक खरगे ने विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस पर यह टिप्पणी की और हिंदुत्ववादी नेताओं और द्वि-राष्ट्र सिद्धांत के बीच वैचारिक संबंधों पर प्रकाश डाला। सोशल मीडिया मंच पर इस पोस्ट पर उपयोगकर्ताओं ने तीखी प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं।

कांग्रेस ने नेतृत्व परिवर्तन संबंधी बयान को लेकर विधायक को कारण बताओ नोटिस जारी किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कांग्रेस की कर्नाटक इकाई की अनुशासन समिति ने रविवार को चन्नगिरी के विधायक बसवराजू वी शिवगंगा को राज्य में कथित नेतृत्व परिवर्तन को लेकर दिये गये बयान के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया। शिवगंगा ने कथित तौर पर कहा था कि उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार कर्नाटक के अगले मुख्यमंत्री होंगे।

विधायक के इस बयान ने राज्य में नेतृत्व परिवर्तन की चर्चा को फिर से हवा दे दी थी। इस विषय पर मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के बयान के बाद विराम लग गया था कि वह अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करेंगे। शिवगंगा ने शनिवार को दावणगेरे में संवाददाताओं से कहा, 'दिसंबर के बाद डीके मुख्यमंत्री बनेंगे...।' अनुशासन समिति के समन्वयक निवेदित अल्वा द्वारा जारी नोटिस में कहा गया है कि शिवगंगा ने मुख्यमंत्री बदलने के संबंध में मीडिया में बयान दिए हैं, जिससे पार्टी के भीतर भ्रम और असहजता की स्थिति पैदा हुई है।

नोटिस में कहा गया कि इन सार्वजनिक बयानों से न केवल पार्टी को असहज स्थिति का सामना करना पड़ा, बल्कि यह कांग्रेस अनुशासन का भी उल्लंघन है। अल्वा ने कहा कि इन अनुशासनहीन टिप्पणियों को गंभीरता से लेते हुए, केपीसीसी अनुशासन समिति ने यह कारण बताओ नोटिस जारी किया है। उन्होंने नोटिस में कहा, ''आपको यह नोटिस प्राप्त होने के सात दिनों के भीतर अपने बयानों के संबंध में स्पष्टीकरण देने का निर्देश दिया जाता है।'' कांग्रेस की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष शिवकुमार ने शिवगंगा के बयान पर शनिवार को नराजगी जताई थी। उन्होंने शिवगंगा के बयान को पार्टी अनुशासन का ''उल्लंघन'' करार दिया और कहा कि उन्हें नोटिस भेजा जाएगा। शिवकुमार ने कहा था, ''किसी को भी मुख्यमंत्री पद और अन्य मुद्दों पर बात नहीं करनी चाहिए। विधायकों को पार्टी अनुशासन का पालन करना चाहिए। उन्हें सीमा नहीं लांघनी चाहिए। उन्हें पहले भी सख्त निर्देश दिए गए हैं कि वे अनावश्यक बयान देकर भ्रम पैदा न करें। इसके बावजूद शिवगंगा द्वारा एक बार फिर इस मामले पर बयान देना पार्टी अनुशासन का उल्लंघन है। इसलिए उन्हें नोटिस दिया जाएगा।''

भाजपा नेता बोम्मई ने जीएसटी सुधार से जुड़ी मोदी की घोषणा का स्वागत किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद बसवराज बोम्मई ने माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में कमी लाने और कर ढांचे को सरल बनाने से जुड़ी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की घोषणा का रविवार को स्वागत किया। उन्होंने इसे 'एक बड़ा सुधार' बताया, जिससे व्यवसायों और उपभोक्ताओं, दोनों को लाभ होगा।

बोम्मई ने यहां एक बयान में कहा, ''माल एवं सेवा कर की दरों में कमी और कर ढांचे को सरल बनाने की प्रधानमंत्री मोदी की घोषणा का बहुत स्वागत है। कर सरलीकरण की दिशा में यह कदम आने वाले दिनों में व्यापारियों और उपभोक्ताओं को बहुत लाभान्वित करेगा।''

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री ने याद दिलाया कि 'एक राष्ट्र, एक कर' के रूप में पेश किए गए जीएसटी का उद्देश्य एक सरल और एकसमान कर प्रणाली बनाना था। हावेरी के सांसद ने कहा कि यह सुधार छोटे व्यापारियों और किसानों की मदद के इरादे से पेश किया गया था, लेकिन किसानों, व्यापारियों और व्यवसायों से मिली प्रतिक्रिया ने बदलावों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, ''इस प्रतिक्रिया के आधार पर, कर की श्रेणियों को कम करने और कुछ वस्तुओं पर जीएसटी दरों को कम करने का निर्णय लिया गया।'' उन्होंने यह भी बताया कि उनके नेतृत्व में मंत्रियों के एक समूह ने जीएसटी परिषद को सिफारिशें प्रस्तुत करने से पहले लगभग 18 महीनों तक इस मामले का अध्ययन किया। जीएसटी की शुरुआत एक जुलाई, 2017 को की गई थी।

आज से तमिलनाडु में 38 ट्रेनों का अतिरिक्त ठहराव होगा : एल. मुरुगन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय कार्य राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन ने कहा कि 18 अगस्त से तमिलनाडु में चलने वाली 38 ट्रेनें अतिरिक्त रेलवे स्टेशनों पर रुकेंगी। रविवार को चेन्नई में मीडिया को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जनता की ओर से लगातार मांगें मिल रही थीं कि एक्सप्रेस ट्रेनों, सुपरफास्ट ट्रेनों और पैसेंजर ट्रेनों को अतिरिक्त रेलवे स्टेशनों पर रुकना चाहिए। उन्होंने इसे केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के ध्यान में लाया, जिन्होंने रेल यात्रियों की मांगों को स्वीकार कर लिया और अतिरिक्त ठहराव के लिए आवश्यक आदेश जारी किए।

इस घोषणा के अनुसार, चेन्नई सेंट्रल-शिवमोग्गा साप्ताहिक सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12691) अम्बुर में रुकेगी। शिवमोग्गा से चेन्नई सेंट्रल (12692) जाने वाली ट्रेन भी अम्बुर में रुकेगी। इसी प्रकार, धनबाद-अलाप्पुझा एक्सप्रेस (13351) गुडियात्तम और वानियमबाड़ी में दो-दो मिनट रुकेगी। कोयंबटूर-नागरकोइल एक्सप्रेस ट्रेन (16322) इरुगुर और सिंगनल्लूर में रुकेगी। यह ट्रेन विपरीत दिशा (16321) में भी उपरोक्त स्टेशनों पर और मेलप्पालयम में रुकेगी। पुदुचेरी-कन्याकुमारी एक्सप्रेस (16861) यात्रियों की सुविधा के लिए वल्लियूर में रुकेगी।

केंद्रीय मंत्री डॉ. एल. मुरुगन ने कहा कि तमिलनाडु सरकार को राष्ट्रीय राजमार्गों, हवाई अड्डों और बंदरगाहों के आधुनिकीकरण और विस्तार सहित सामाजिक कल्याण योजनाओं को लागू करने के लिए पिछले 10 वर्षों में लगभग 10 लाख करोड़ रुपये दिए गए हैं। मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार ने 2025-26 में राज्य की रेल परियोजनाओं के लिए 6626 करोड़ रुपये दिए हैं, जबकि 2009-2014 के बीच कांग्रेस के नेतृत्व वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के दौरान यह आवंटन 879 करोड़ रुपये था। तमिलनाडु को वर्तमान में दी जा रही राशि पिछली सरकार के दौरान रेल परियोजनाओं के लिए आवंटित राशि से 654 प्रतिशत अधिक है। मंत्री ने आगे कहा कि अमृत भारत रेलवे स्टेशन योजना के अंतर्गत, तमिलनाडु के 77 रेलवे स्टेशनों के उन्नयन का कार्य तेज़ी से चल रहा है, जिसकी अनुमानित लागत 2948 करोड़ रुपये है। इस योजना के अंतर्गत, चेन्नई एग्मोर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के लिए 800 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं और इस पर कार्य चल रहा है। इसी प्रकार, मदुरै, रामेश्वरम, कन्याकुमारी, कटपडी और सलेम रेलवे स्टेशनों का पुनर्निर्माण कार्य भी तेज़ी से चल रहा है। मंत्री ने बताया कि 33,467 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से 2587 किलोमीटर लंबी नई पटरियाँ बिछाने का कार्य चल रहा है, तथा 10 नई रेल लाइनें, 3 ब्रॉड गेज रेल लाइनें और 9 डबल-ट्रैक लाइनें बिछाई जा रही हैं। मंत्री ने बताया कि मदुरावोयल-चेन्नई हार्बर एलिवेटेड परियोजना का कार्य भी पूरी गति से चल रहा है।

प्लास्टिक निर्माण इकाई में आग :

भवन मालिक और बेटा गिरफ्तार

बेंगलूरु। बेंगलूरु के केआर मार्केट के पास एक प्लास्टिक उत्पाद निर्माण इकाई में लगी भीषण आग के सिलसिले में भवन के मालिक और उसके बेटे को गिरफ्तार कर लिया गया है। आग लगने की इस घटना में एक परिवार को चार सदस्यों सहित पांच लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने भवन के मालिक बालकृष्णय्या शेट्टी और उसके बेटे संदीप शेट्टी के खिलाफ अनधिकृत निर्माण, सुरक्षा उपायों की अनुपस्थिति और अग्नि सुरक्षा सावधानियों को लागू करने में लापरवाही बरतने का मामला दर्ज करने के बाद उन्हें गिरफ्तार किया।

शनिवार देर रात करीब ढाई बजे भूतल स्थित गोदाम में लगी आग तेजी से ऊपरी मंजिलों तक फैल गई। घटना के दौरान अधिकतर लोग वहां से भागने में कामयाब रहे, लेकिन एक परिवार अंदर फंस गया और उनकी मौत हो गई। पुलिस ने घटना में मारे गए लोगों की पहचान मदन सिंह (38), संगीता (33) और उनके दो बच्चों मितेश (सात) और विहान (पांच) तथा उनके पड़ोसी सुरेश कुमार (26) के रूप में की है। मदन सिंह मूल रूप से राजस्थान के निवासी थे और लगभग 10 वर्षों से उन्होंने इस इमारत को किराए पर लिया था। वह एक छोटी सी निर्माण इकाई चलाते थे जहां प्लास्टिक के रसोई के सामान के साथ-साथ चटाई और स्टील के रसोई के बर्तन भी बनाए जाते थे। वह इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल पर रहते थे। हलसुरु गेट पुलिस ने पिता-पुत्र को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है।

उपमुख्यमंत्री ने नगरथपेट क्षेत्र का दौरा किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने कहा, अवैज्ञानिक तरीके से निर्मित और कमज़ोर इमारतों को सबसे पहले सुरक्षित किया जाना चाहिए। निगम अधिकारियों को ऐसी इमारतों की पहचान कर नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए हैं। शिवकुमार ने रविवार को नगरथपेटे में धर्मरायस्वामी मंदिर के पास आग से क्षतिग्रस्त क्षेत्र का दौरा किया और स्थिति का जायज़ा लिया। बाद में, उन्होंने घटनास्थल और सदाशिवनगर स्थित आवास के पास मीडिया को अपनी प्रतिक्रिया दी।

उन्होंने कहा, जहाँ दो या तीन मंज़िलें बननी चाहिए थीं, वहाँ आठ मंज़िलें बन गई हैं। कई इमारतें रहने लायक नहीं हैं। ऐसी इमारतों को गिराना बाद की बात है। पहले सर्वेक्षण किया जाएगा। यह एक दिन में पूरा होने वाला काम नहीं है। इसमें सालों लगेंगे। दिल्ली और मुंबई में भी ऐसी ही स्थिति रही है। जब मैंने अंदर आकर देखा, तो मैं दंग रह गया। इतनी तंग जगह में आग लग जाए तो लोग भाग जाते हैं, और फिर भगदड़ मच जाती है और लोग मर जाते हैं।

उन्होंने कहा, लापरवाह इमारत मालिकों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज कर लिया गया है। जिस इमारत में दुर्घटना हुई, उसके मालिकों को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस को उचित कानूनी कार्रवाई करने की पूरी छूट दे दी गई है।

सरकार ने दुर्घटना में मारे गए प्रत्येक व्यक्ति के परिवार को पाँच-पाँच लाख रुपये का मुआवज़ा देने का फैसला किया है। उन्होंने कहा, हम कमज़ोर इमारतों को तुरंत नहीं गिराएँगे। मालिकों को तुरंत उनकी मरम्मत करवानी चाहिए। वरना हम कार्रवाई करेंगे। क्योंकि हम नहीं चाहते कि कमज़ोर इमारतें गिरकर कोई बड़ी समस्या खड़ी करें। भविष्य में, हम किसी भी कारण से इस तरह की इमारतों के निर्माण की अनुमति नहीं देंगे।

चिक्कपेट और नगरथपेटे के आवासीय क्षेत्र होने के बावजूद अब व्यावसायिक केंद्रों में तब्दील हो जाने के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, लोग गरीबी में जी रहे हैं। अगर हम अग्नि संहिता के अनुसार चलें, तो सभी इमारतों को गिराना होगा। कई इमारतों की छत पर चढ़ना भी संभव नहीं है। शॉर्ट सर्किट के कारण लगी आग में लोगों की मौत हो गई है। सभी मृतक राजस्थान के हैं। वे यहाँ आजीविका कमाने के लिए कहीं से भी आए थे।

धर्मस्थल में खुदाई को लेकर भाजपा और कांग्रेस के बीच जुबानी जंग

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक में सत्तारूढ़ कांग्रेस और विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने रविवार को यहां के धर्मस्थल गांव में जारी खुदाई कार्य को लेकर एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए। पिछले दो दशकों में हत्या की कई घटनाओं खासकर युवतियों एवं महिलाओं से बलात्कार के बाद उनकी हत्या कर शव को दफनाए जाने के आरोपों के कारण यह खुदाई कार्य किया जा रहा है।

भाजपा की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष विजयेंद्र येडीयुरप्पा ने पार्टी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए धर्मस्थल गांव का दौरा किया और वहां स्थापित देवता मंजूनाथ स्वामी और अन्नप्पा स्वामी के दर्शन किए तथा धर्माधिकारी वीरेंद्र हेगड़े का आशीर्वाद लिया। विजयेंद्र ने दोहराया कि भाजपा को आरोपों की जांच के लिए राज्य सरकार द्वारा गठित विशेष जांच दल (एसआईटी) पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन उन्होंने धर्मस्थल गांव के बारे में ''दुष्प्रचार'' करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा, ''भाजपा ने धर्मस्थल मामले में राज्य सरकार द्वारा एसआईटी जांच का कभी विरोध नहीं किया था। लेकिन अब मुद्दा यह है कि जिला प्रभारी मंत्री दिनेश गुंडराव ने कहा है कि वामपंथी समूहों के दबाव के कारण राज्य सरकार ने एसआईटी गठित की।''

उन्होंने कहा कि उपमुख्यमंत्री डी. के. शिवकुमार ने स्वयं धर्मस्थल प्रकरण के पीछे एक ''बड़ी साजिश'' की बात को स्वीकार किया है। विजयेंद्र ने कहा कि इस मामले में उनकी पार्टी का रुख बहुत ''स्पष्ट'' है। शिकारीपुरा से विधायक ने कहा, ''शिकायतकर्ता कोई भी हो, इस शिकायत की सत्यता और इसके पीछे के लोगों तथा इस पूरे प्रकरण में काम करने वाली ताकतों की जांच होनी चाहिए क्योंकि इस झूठे प्रचार के कारण लाखों श्रद्धालुओं को ठेस पहुंची है, उनकी भावनाएं आहत हुई हैं।'' विजयेंद्र ने तर्क दिया कि अब तक कुछ भी ठोस सामने नहीं आया है। उन्होंने कहा, ''पूरे प्रकरण की गहन जांच होनी चाहिए, यानी शिकायतकर्ता, वामपंथी समूहों और इस दुष्प्रचार के पीछे काम कर रही ताकतों की जांच होनी चाहिए।'' भाजपा पर पलटवार करते हुए उपमुख्यमंत्री डी. के. शिवकुमार ने इस यात्रा को राजनीति से प्रेरित बताया। शिवकुमार ने बेंगलूरु में संवाददाताओं से कहा, ''धर्मस्थल की भाजपा की यात्रा एक राजनीतिक यात्रा है। यह न तो 'धर्म-यात्रा' है, न ही धर्मस्थल के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए या हिंदू धर्म से संबंधित है, बल्कि यह सिर्फ एक 'राजनीतिक यात्रा' है।'' उन्होंने सवाल किया कि एसआईटी के गठन के समय भाजपा चुप क्यों रही।

उपमुख्यमंत्री कर्नाटक की कांग्रेस इकाई के अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने कहा, ''जब उन्होंने (भाजपा ने) धर्मस्थल के खिलाफ साजिश रची थी, तब उन्होंने हिंदू मंचों को क्यों प्रोत्साहित किया? लेकिन अब वे (धर्मस्थल के पक्ष में) बोल रहे हैं।'' इस बीच, रविवार को धर्मस्थल में खुदाई का काम रोक दिया गया।

अब सबकी निगाहें गृह मंत्री जी. परमेश्वर पर टिकी हैं, जिन्होंने कहा है कि वह सोमवार को विधानसभा में एक विस्तृत बयान देंगे। भाजपा ने नेत्रवती नदी और धर्मस्थल के आसपास कथित रूप से ''सैकड़ों कब्रों'' के होने की शिकायत के बाद खुदाई पर स्पष्टता की मांग की, जिसके बाद परमेश्वर का यह बयान आया है। शिकायत एक पूर्व सफाई कर्मचारी ने की थी, जिसकी पहचान गुप्त रखी गई है। भाजपा ने शिकायतकर्ता के खिलाफ कार्रवाई की भी मांग की है और सरकार से उसकी पहचान और पृष्ठभूमि का खुलासा करने का आग्रह किया

दर्शन के सोशल मीडिया अकाउंट को संभालेंगी उनकी पत्नी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कन्नड़ फिल्म अभिनेता दर्शन थुगुदीपा की पत्नी विजयलक्ष्मी ने रविवार को कहा कि अभिनेता की अनुपस्थिति में वह उनके सोशल मीडिया हैंडल को संभालेंगी और फिल्म से जुड़ी जानकारियां साझा करेंगी। दर्शन इस समय अपनी मित्र पवित्रा गौड़ा और अन्य आरोपियों के साथ रेणुकास्वामी हत्याकांड मामले में जेल में हैं।

विजयलक्ष्मी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''मेरे प्यारे प्रशंसकों, आपके 'चैलेंजिंग स्टार' आप सभी को अपने दिल में रखते हैं। जब तक वह आपसे सीधे जुड़ नहीं पाते, मैं उनका सोशल मीडिया संभालूंगी और फिल्म से संबंधित जानकारियां साझा करूंगी और उनकी फिल्मों का प्रचार करूंगी।'' उन्होंने लिखा, ''आपके द्वारा दिखाया गया प्यार, प्रार्थना और धैर्य उन्हें और हमारे परिवार को अपार शक्ति देते हैं। सकारात्मकता और एकजुटता बनाए रखें। वह उसी ऊर्जा और प्रेम के साथ जल्द लौटेंगे, जैसा आप हमेशा से जानते हैं।''

रेणुकास्वामी हत्या मामले में दर्शन को गिरफ्तार किया गया था लेकिन कर्नाटक उच्च न्यायालय ने उन्हें जमानत दे दी थी। हाल में उच्चतम न्यायालय ने दर्शन की जमानत रद्द कर दी जिसके बाद उन्हें दोबारा हिरासत में लिया गया। आरोप है कि दर्शन और उनके साथियों ने रेणुकास्वामी की हत्या की थी क्योंकि उसने पवित्रा गौड़ा को सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक संदेश भेजे थे।

नम्मा मेट्रो की येलो लाइन सेवाएं आज सुबह 5 बजे शुरू

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। बेंगलूरु मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीएमआरसीएल) ने रविवार को घोषणा की कि नम्मा मेट्रो की येलो लाइन सेवाएं सोमवार सुबह 5 बजे शुरू होंगी।

विस्तारित स्वतंत्रता दिवस सप्ताहांत के बाद यात्री यातायात में अनुमानित वृद्धि को देखते हुए, पहली ट्रेनें 18 अगस्त को सुबह 5 बजे आरवी रोड और डेल्टा इलेक्ट्रॉनिक्स बोम्मासंद्रा स्टेशनों से रवाना होंगी।

बीएमआरसीएल ने एक बयान में कहा, 'यह विशेष व्यवस्था केवल सोमवार के लिए लागू है। मंगलवार से सेवाएं नियमित समय सुबह 6:30 बजे फिर से शुरू होंगी।' निगम ने यात्रियों से परेशानी मुक्त यात्रा के लिए इस सुबह की सेवा का लाभ उठाने का आग्रह किया है। इसमें कहा गया है कि पर्पल और ग्रीन लाइनों पर सेवाएं मौजूदा समय-सारिणी के अनुसार सोमवार सुबह 4:15 बजे से चलती रहेंगी।

सिद्दरामय्या ने राहुल गांधी के 'संघर्ष' का जिक्र करते हुए फिर उठाया 'चुनावी अनियमितता' का मुद्दा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या ने रविवार को एक यूट्यूब वीडियो लिंक पोस्ट करते हुए कहा कि एक सप्ताह पहले, हमारे नेता राहुल गांधी ने पिछले लोकसभा चुनावों में बेंगलूरु सेंट्रल लोकसभा क्षेत्र के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में हुई चुनावी अनियमितताओं को उजागर किया था।

सिद्दरामय्या ने कहा कि तब से, उन्होंने (राहुल गांधी) चुनावी अनियमितताओं के खिलाफ देशव्यापी संघर्ष भी छेड़ा है।

मुख्यमंत्री ने दावा किया कि हमारे उम्मीदवार मंसूर अली खान, जो मतगणना के अंतिम चरण तक जीत के प्रति आश्वस्त थे, अवैध वोटों के कारण अंतिम समय में हार गए थे। उन्होंने यूट्यूब चैनल का जिक्र करते हुए कहा कि उसके द्वारा लिए गए एक साक्षात्कार में, मंसूर अली खान ने जानकारी साझा की, जैसे कि 'वोट धांधली कितनी व्यवस्थित थी? इसमें कौन शामिल था?'

मुख्यमंत्री ने कहा कि मंसूर अली खान की बात सुनें और चुनावी अनियमितताओं के खिलाफ हमारी लड़ाई में शामिल हों।

एक लाख रुपए रिश्वत लेते दो पुलिस अधिकारी और एक व्यक्ति गिरफ्तार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। राममूर्ति नगर थाने के दो पुलिस अधिकारियों और एक अन्य व्यक्ति को कथित तौर पर एक लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया है। लोकायुक्त अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। आरोपियों की पहचान पुलिस निरीक्षक राजशेखर (48), उपनिरीक्षक रुमान पाशा (32) और देवरा जीवनहल्ली निवासी इमरान बाबू (32) के रूप में हुई है।लोकायुक्त अधिकारियों ने बताया कि उन्हें शनिवार को मांगी गई राशि में से एक लाख रुपये लेते हुए पकड़ा गया, पैसा बरामद कर लिया गया। के.आर.पुरम निवासी शिकायतकर्ता मंजूनाथ (47) ने लोकायुक्त अधिकारियों से संपर्क कर आरोप लगाया कि आरोपियों ने आभूषण और नकदी गायब होने के घरेलू विवाद से जुड़ी उनकी शिकायत की जांच के लिए दो लाख रुपये की मांग की थी।

जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र तक पहुँचे, विकास कार्य समयबद्ध पूरे हों : दीया कुमारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। उप मुख्यमंत्री श्रीमती दीया कुमारी रविवार को भीलवाड़ा जिले के एक दिवसीय दौरे पर रहीं। इस अवसर पर उन्होंने गुलाबपुरा उपखंड कार्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक में सार्वजनिक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी), पर्यटन विभाग तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की गहनता से समीक्षा की। बैठक में उप मुख्यमंत्री ने विभागीय अधिकारियों से चल रहे कार्यों की जानकारी ली और स्पष्ट निर्देश दिए कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र व्यक्ति तक समयबद्ध तरीके से पहुँचे। उन्होंने कहा कि सड़क निर्माण एवं मरम्मत कार्य गुणवत्तापूर्ण और निर्धारित समय में पूरे किए जाएँ, पर्यटन से जुड़े विकास कार्यों को गति दी जाए तथा महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनाएँ धरातल पर प्रभावी रूप से लागू हों।

उप मुख्यमंत्री ने पीडब्ल्यूडी से जुड़ी शिकायतों पर कड़ा रुख अपनाते हुए निर्देश दिये कि गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध रूप से कार्य नहीं करने वाले लापरवाह ठेकेदारों को ब्लैकलिस्ट किया जाए। उन्होंने कहा कि यदि विभागीय आधिकारिक फील्ड में रहकर स्वयं मॉनिटरिंग करें। उन्होंने बताया कि सेवा ऐप को शीघ्र ही आमजन के लिए खोला जाएगा साथ ही पीडब्ल्यूडी द्वारा किए गए नवाचार की सराहना की जिसमें पॉलिटेक्निक कॉलेज के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देकर रैंडम रूप से जिले की 51 सड़कों की चयनित छात्रों से सगुनी यात्रा के माध्यम से गुणवत्ता जांच करवाई गई। इसमें 45 सड़के उत्तम व 6 सड़के मध्यम गुणवत्ता वाली पाई गई।

उप मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि भीलवाड़ा जिले से जुड़ी शेष रही बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की देरी नहीं की जाए। उन्होंने कॉरपोरेट और कंपनियों को अपनी सीएसआर राशि को जनहित के कार्यों में खर्च करने का भी आह्वान किया। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि आंगनबाड़ियों की स्थिति में सुधार लाने के लिए ठोस प्रयास किए जाएँ। इसके लिए भामाशाहों को प्रोत्साहित करें कि वे आंगनबाड़ियों में मरम्मत व जीर्णोद्धार के कार्य शुरू करें।

पर्यटन विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने बताया कि केंद्र और राज्य सरकार जिले के पर्यटन स्थलों के जीर्णोद्धार एवं मरम्मत कार्य के लिए प्रतिबद्ध हैं। आसींद के देवनारायण मंदिर सहित 20 अन्य मंदिर व आस्था केंद्रों के विकास हेतु प्रसाद योजना के तहत स्वीकृत 48 करोड़ की राशि से शीघ्र ही कार्य शुरू किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिलान्यास एवं उद्घाटन संबंधी सूचनाएँ समय पर जनप्रतिनिधियों तक पहुँचाई जाएँ तथा आमजन से सीधा संवाद बनाए रखते हुए उनकी समस्याओं का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित किया जाए।

जिला कलेक्टर जसमीत सिंह संधू ने बैठक में विभागवार प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जिस पर उप मुख्यमंत्री ने प्रशासनिक कार्यप्रणाली की सराहना की और कहा कि निरंतर समीक्षा एवं समयबद्ध क्रियान्वयन से आमजन का विश्वास और मजबूत होगा।

कांग्रेस ने 'वोट चोरी' के खिलाफ अभियान तेज किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। कांग्रेस की राजस्थान इकाई ने राहुल गांधी द्वारा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और निर्वाचन आयोग पर लगाए गए वोट चोरी के आरोपों को लेकर अपना अभियान तेज कर दिया। पार्टी के वरिष्ठ नेता सोशल मीडिया पर अपनी 'डिस्प्ले पिक्चर्स' (डीपी) बदलकर वोट चोरी रोको और वोट चोरी से आजादी जैसे नारे लगा रहे हैं। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विपक्ष के नेता टीकाराम जूली, पूर्व मंत्री हरीश चौधरी और पूर्व विधायक संयम लोढ़ा ने एकजुटता दिखाते हुए 'व्हाट्सऐप' और 'एक्स' पर अपनी-अपनी डीपी बदल दी है।

गहलोत ने पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं से ऐसा ही करने का आह्वान करते हुए कहा, हर चोरी हुआ वोट, हमारी आवाज और पहचान की लूट है। उन्होंने कहा, राहुल गांधी की यह लड़ाई जनता के जनादेश, निर्वाचन आयोग-भाजपा के वोट चोरी की साजिश को बेनकाब करने,और लोकतंत्र को बचाने की है। गहलोत ने कहा कि वोट चोरी के खिलाफ अपना समर्थन दिखाने के लिए आज ही अपनी डीपी बदलें।

कांग्रेस के मुताबिक उसने राजस्थान सहित कई राज्यों में विरोध प्रदर्शन किए हैं और इस मुद्दे को ज़िला, ब्लॉक और वार्ड स्तर तक ले जाने की योजना बना रही है। गौरतलब है कि कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने रविवार को बिहार के सासाराम में 16 दिवसीय 'वोट अधिकार' यात्रा की शुरुआत की। इस मौके पर उन्होंने एक जनसभा को भी संबोधित किया।

कुछ हिस्सों में बारिश का दौर जारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान में बीते 24 घंटों के दौरान पूर्वी हिस्सों के कुछ स्थानों पर मेघ गर्जन और वज्रपात के साथ हल्की से मध्यम तथा कहीं-कहीं पर भारी वर्षा दर्ज की गई। मौसम विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि इस दौरान राज्य के पश्चिमी हिस्सों में कहीं-कहीं पर हल्की से मध्यम बारिश दर्ज की गई। उन्होंने बताया राज्य में सबसे अधिक बारिश मसूदा (अजमेर) में 111.5 मिलीमीटर दर्ज की गई। प्रवक्ता ने बताया कि रविवार सुबह 8:30 बजे तक सिरोही जिले के माउंट आबू में पिछले 24 घंटों में 106 मिमी, अजमेर के किशनगढ़ में 80 मिमी और अजमेर के नसीराबाद में 60 मिमी बारिश दर्ज की गई।

उन्होंने बताया कि बंगाल की खाड़ी के ऊपर लगातार कम दबाव के बन रहे एक तंत्र से अगस्त के अंतिम सप्ताह में राज्य के अधिकांश हिस्सों में मानसून की सक्रियता बनी रहने और मध्यम से भारी बारिश होने की प्रबल संभावना है।

बागड़े ने आदिवासियों के बीच मनाया अपना जन्म दिन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

सलूम्बर। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने अपना जन्म दिन सादगी एवं आदिवासी लोगों के साथ मिल बैठकर मनाया। बागड़े ने रविवार सुबह सलूम्बर जिले के बरोड़ा में आदिवासी लोगों के बीच अपना जन्म दिन मनाया और इस दौरान उन्होंने आदिवासी समुदाय की समस्याओं, शिक्षा की स्थिति के बारे में भी विशेष रूप से जानकारी ली। उन्होंने भील समाज और उनकी परम्पराओं के संरक्षण पर भी स्थानीय लोगों से संवाद किया। उन्होंने जन्म दिन पर आदिवासी गांव में वृक्षारोपण भी किया।

राज्यपाल बाद में गांव के एकलव्य मॉडल स्कूल पहुंचे वहां आदिवासी बच्चों के बीच उन्होंने जन्म दिन का केक काटकर सबसे पहले उन्हें ही उसे खिलाया। बच्चों के साथ उन्होंने मिल बैठकर खूब बातें की।

आदिवासी समुदाय के बच्चों को खूब पढ़ने और जीवन में निरंतर आगे बढ़ने के लिए भी प्रेरित किया। बच्चों से उन्होंने मेवाड़ की वीर धरती, महाराणा प्रताप और भीलों की सहायता से युद्ध करने की कहानियां सुनाई।

बागड़े ने मौके पर ही मौजूद अधिकारियों को केन्द्र एवं राज्य सरकार की विकास योजनाओं से आदिवासियों को अधिकाधिक लाभान्वित करने के लिए भी निर्देश दिए। उन्होंने लाभार्थी संवाद में चेक वितरण किया और आदिवासी उत्पादों के अधिकाधिक विपणन के लिए कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान सम्मान निधि और आरोग्य योजना के माध्यम से गरीब और आदिवासी समुदाय के लोगों को मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में सभी मिलकर कार्य करें।

आदिवासी समुदाय की शत प्रतिशत शिक्षा के लिए उन्होंने हरसंभव सहयोग करने और उन्हें प्रेरित कर पढ़ाने, योजनाओं से लाभान्वित करने का आह्वान किया। राज्यपाल ने अपने जन्म दिन की पूर्व संध्या बरोड़ा गांव पहुंचे थे और रात्रि विश्राम भी उन्होंने आदिवासी गांव में ही किया। उन्होंने रात्रि में लोगों के साथ चौपाल की। खाट पर बैठकर जनजातीय लोगों के साथ संवाद किया। इस दौरान जनजातीय समुदाय राज्यपाल को अपने बीच पाकर अभिभूत हो गया। बच्चों ने राज्यपाल के पास पहुंचकर उन्हें अपने सृजन कर्म से अवगत कराया।

कृषि कॉलेज तो खोल दिए, भवन तक जाने का रास्ता नहीं बनाया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बारां। राजस्थान में बारां जिले में तत्कालीन सरकार ने आनन -फानन में दो सरकारी कृषि महाविद्यालय तो खोल दिए, लेकिन वित्तीय स्वीकृति में महाविद्यालय के भवनों में जाने के रास्तों को शामिल ही नहीं किया गया। सूत्रों ने रविवार को बताया कि अब कृषि विपणन विभाग रोड़ कैसे बनाएं जाएं उसके लिए ताने-बाने बुन रहा हैं। पिछली सरकार ने बजट घोषणा के तहत राज्य में 29 नए कृषि महाविद्यालय खोलने की घोषणा करते हुए प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी की थी।

उनमें बारां जिले के बारां और आदिम जाति सहरिया उपखंड के शाहबाद में कृषि महाविद्यालय शामिल थे। सूत्रों ने बताया कि बारां में महाविद्यालय भवन के लिए समसपुर और शाहाबाद में राष्ट्रीय राजमार्ग के खुशियारा में चयनित भूमि पर इनके भवनों का निर्माण कार्य शुरू हुआ था जो अब करीब पूर्ण होने के कगार पर है, लेकिन इन दोनों महाविद्यालयों में प्रवेश करने के लिए पक्के रास्ते ही नहीं है। कारण बताया जा रहा है कि वित्तीय स्वीकृति में सड़क बनना ही शामिल नहीं था तो कैसे बनाएं।

निर्माण कार्य एजेंसी जिला कृषि विपणन विभाग के अधिशाषी अभियंता शिवभूषण शर्मा ने बताया कि राजकीय कृषि महाविद्यालय शाहाबाद के निर्माण के लिए 880 लाख रुपए की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति मिली थी। शाहबाद कृषि महाविद्यालय के निर्माण पर अब तक 875 लाख की राशि के कार्य हो चुके हैं।

यह करीब बनकर तैयार है, जिसे शीघ्र विभाग को सौंप दिया जाएगा। शर्मा ने बताया कि शाहबाद कृषि महाविद्यालय 3244 वर्ग मीटर क्षेत्र में बना है।

इस भवन में चार अतिरिक्त कक्ष और सात प्रयोगशालाएं बनाई गई हैं। भवन में आठ प्रोफ़ेसर कक्ष, एक प्राचार्य कक्ष और एक सभाकक्ष बनाया गया है। दो प्रयोगशालाएं, एक पुस्तकालय एवं नौ प्रोफ़ेसर कक्ष के साथ एक स्पोर्ट्स कक्ष बनाया गया है। इसी तरह की बारां केसरसपुर कृषि महाविद्यालय की स्थिति है। उन्होंने बताया कि कृषि महाविद्यालय भवन निर्माण में सड़क निर्माण का कार्य शामिल नहीं था, इसलिए बन नहीं पाया। इसके लिए सरकार को लिखा जाएगा या फिर किसी भामाशाह या जनप्रतिनिधि से संपर्क किया जाएगा ताकि किसी तरह सड़क बन सके। भवन के चारों ओर चारदीवारी का काम भी नहीं हो सका है। बजट का अभाव और वन भूमि की भी समस्या है।

वायुसेना विंग कमांडर साइबरी ठगी का हुआ शिकार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

श्रीगंगानगर। राजस्थान में भारतीय वायुसेना के सूरतगढ़ वायुसेना के हवाई अड्डे पर तैनात एक विंग कमांडर से साइबर ठगों ने झांसा देकर एक करोड़ 11 लाख 82 हजार 500 रुपए ठग लिए। पुलिस सूत्रों ने बताया कि जैसे ही इस धोखाधड़ी का पता चला, विंग कमांडर ने तुरंत राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) पर शिकायत दर्ज कराई। श्रीगंगानगर की साइबर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए विभिन्न बैंक खातों में करीब सात लाख रुपए होल्ड करवा दिए। पुलिस ने बताया कुछ अन्य बैंक खातों को तलाशा जा रहा है और संबंधित बैंकों से अतिरिक्त जानकारी का इंतजार है, जिससे और राशि ठगों के हाथ लगने से बचाई जा सके। विंग कमांडर ने साइबर थाने में अज्ञात ठगों के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया है।

जांच की जिम्मेदारी साइबर थाने के पुलिस इंस्पेक्टर रमेश कुमार न्यौल को सौंपी गई है, जबकि साइबर थाना प्रभारी डीएसपी कुलदीप वालिया इस मामले की बारीकी से निगरानी कर रहे हैं।

विंग कमांडर ने 10 जून 2025 को '55 शून्या ग्रोथ क्लब' नामक एक व्हाटसएप ग्रुप ज्वाइन किया। इस ग्रुप में व्यापारिक जानकारियां और निवेश के आकर्षक अवसरों की जानकारी दी जाती थी, जो भरोसेमंद लगती थी। विंग कमांडर ने इसी ग्रुप के झांसे में आकर विभिन्न बैंकों के जरिए एक करोड़ 11 लाख 82 हजार 500 रुपए की राशि जमा करा दी। ठगी का पता चलने पर उन्होंने पुलिस से सम्पर्क किया।

दिव्यांग जनों की सामर्थ्य किसी से कम नहीं, उन्हें मुख्यधारा से जोड़ना हम सबका दायित्व : दिलावर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

कोटा। राजस्थान के शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने दिव्यांग जनों का सामर्थ्य किसी से कम नहीं बताते हुए कहा है कि उन्हें मुख्यधारा से जोड़ना हम सबका दायित्व हैं। दिलावर रविवार को यहां समावेशी शिक्षा के तहत नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आवासीय छात्रावास, डाईट परिसर में विशेष आवश्यकता वाले 34 विद्यार्थियों को सहायक उपकरण वितरण कार्यक्रम में बोल रहे थे। यह उपकरण एएलआईएमसीओ कानपुर से प्राप्त हुए हैं, जिन्हें दिलावर ने बच्चों को सौंपा। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों से संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया और कहा कि विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे सामर्थ्य में किसी से कम नहीं हैं। उनमें कई विशिष्ट खूबियां होती हैं और इतिहास साक्षी है कि विशेष योग्यता वाले जनों ने सृष्टि के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उन्होंने कहा कि यह छात्र देश का भविष्य हैं और राष्ट्र के विकास में उनका योगदान अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आत्मनिर्भर भारत के लिए कृतसंकल्पित हैं। दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना और उन्हें सम्मानजनक जीवन उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि हम सबकी जिम्मेदारी है कि प्रत्एक व्यक्ति की सामर्थ्य के अनुसार सेवा करें और मानवता का परिचय दें। यह सभी लोगों की परीक्षा है कि किस प्रकार से जरूरतमंद की मदद कर हम ईश्वर द्वारा दिए गए मानव जीवन को सार्थक बनाते हैं। दिलावर ने सभी नागरिकों से अपील की कि वे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए स्वदेशी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करें और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाते हुए पॉलिथिन का प्रयोग न करें तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार पूर्ण रूप से प्रत्एक छात्र के साथ खड़ी है उन्होंने कहा राज्य सरकार सबका साथ, सबका विकास के उद्देश्य के साथ पूर्ण संवेदनशीलता से कार्य कर रही है।

दीया कुमारी ने गोविंद देव मंदिर में दर्शन किए

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने भगवान श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव पर शनिवार मध्यरात्रि को जयपुर के आराध्य देव गोविंद देव मंदिर में दर्शन किए और प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि की कामना की। जैसे ही रात के 12 बजे पूरे मंदिर परिसर में नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की के जयघोष गूंजे, वातावरण भक्ति और उल्लास से सराबोर हो गया।

भगवान श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव के इस विशेष क्षण पर ठाकुरजी का अलौकिक श्रृंगार और झांकी के दर्शन श्रद्धालुओं को भावविभोर कर देने वाले थे। इस अवसर पर मंदिर में उमड़ी हजारों भक्तों की भीड़, गूंजते भजन और जयकारों ने रात को अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव में परिवर्तित कर दिया। इस मौके श्रीमती दीया कुमारी ने भगवान गोविंद देव का नमन कर प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य और शांति की मंगलकामनाएं की।

लापता नाबालिग लड़की का शव झाड़ियों से मिला, ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के बाड़मेर जिले में दो दिन पहले अपने घर से लापता हुई 17 वर्षीय नाबालिग लड़की का शव रविवार को बालोतरा-सांचौर मेगा राजमार्ग के किनारे झाड़ियों में मिला। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि इस घटना के विरोध में स्थानीय लोगों ने करीब तीन घंटे तक सड़क जाम रखी। थानाधिकारी चांद सिंह ने बताया कि मृतका की पहचान सोरकी देवासी के रूप में हुई है, जिसका शव रविवार सुबह असाड़ा के पास बुरी तरह से सड़ी-गली हालत में मिला। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि 15 अगस्त की शाम को बालोतरा से सिणधरी जा रही एक कार ने लड़की को टक्कर मार दी, जिससे वह सड़क से करीब 25 फुट नीचे झाड़ियों में जा गिरी। थानेदार ने बताया कि हालांकि, स्थानीय लोग कार दुर्घटना में घायल हुए लोगों को बचाने के लिए दौड़े, जिससे इस घटना का पता नहीं चल पाया। बाद में घायलों को इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई।

सिंह ने बताया कि जब लड़की घर नहीं लौटी तो उसके चचेरे भाई ने जसोल थाने में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि आक्रोशित ग्रामीणों ने कार्रवाई की मांग को लेकर राजमार्ग जाम कर दिया और शव उठाने से इनकार कर दिया। स्थानीय विधायक अरुण चौधरी और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा कार्रवाई का आश्वासन दिए जाने के बाद ही जाम खुलवाया जा सका।

चरित्र, समाज और राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम है शिक्षा : देवनानी

जयपुर। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने रविवार को राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय के मानविकी सभागार में आयोजित श्रद्धेय जयदेव पाठक जन्म शताब्दी समारोह में कहा कि श्रद्धेय जयदेव पाठक के साथ उनका बहुत लंबा सफर रहा, वे उनके आदर्श है। शिक्षक संघ में कार्य करते हुए उनका सानिध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने हमेशा स्वयं पर कम से कम खर्चा करते हुए, बहुत मित्तव्ययता से रहते हुए समाज को अधिक से अधिक देने का प्रयास किया। देवनानी ने कहा कि उन्हीं के दिए संस्कारों के कारण जीवन यात्रा में वे ऊंचाइयों तक पहुंच सके हैं। पाठक का जीवन राष्ट्र उत्थान को समर्पित रहा। वे समाज के आदर्श हैं। उनका संपूर्ण जीवन शिक्षा और राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित रहा।

बीजद प्रमुख नवीन पटनायक को उम्र संबंधी बीमारियों के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया

भुवनेश्वर/भाषा। बीजू जनता दल (बीजद) प्रमुख और ओडिशा विधानसभा में विपक्ष के नेता नवीन पटनायक को उम्र संबंधी बीमारियों के कारण रविवार को यहां एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। पार्टी नेताओं ने यह जानकारी दी। बीजद के एक वरिष्ठ नेता ने कहा, अस्पताल पटनायक की स्वास्थ्य स्थिति पर जल्द ही एक बुलेटिन जारी करेगा। पार्टी नेताओं ने बताया कि 78 वर्षीय पूर्व मुख्यमंत्री पटनायक ने शनिवार रात बेचैनी की शिकायत की थी, जिसके बाद कुछ डॉक्टर उनके आवास पर आये थे। पटनायक ने मुंबई के एक अस्पताल में सर्वाइकल ऑर्थराइटिस की सर्जरी कराई थी और वह 12 जुलाई को ओडिशा लौट आए थे।

निर्वाचन आयोग के कंधों पर लोकतंत्र बचाने का 'ऐतिहासिक दायित्व' : अखिलेश

लखनऊ/भाषा। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को कहा कि वर्तमान में लोकतंत्र को बचाने का 'ऐतिहासिक' दायित्व निर्वाचन आयोग के कंधों पर है और जब आयोग 'सही रास्ते' पर चल पड़ेगा तो करोड़ों भारतवासियों का साथ उनका रक्षा कवच बन जाएगा। यादव ने यहां जारी एक बयान में कहा कि आयोग का एक 'सही और साहसिक कदम' देश की अनंत पीढ़ियों का भविष्य और कल्याण सुनिश्चित कर सकता है। उन्होंने कहा, निर्वाचन आयोग को सुधार ही नहीं, आमूलचूल परिवर्तन की अपरिहार्यता है। आज लोकतंत्र को बचाने का ऐतिहासिक दायित्व उसके कंधों पर है। माना उनके ऊपर कई प्रकार के अवांछित दबाव काम कर रहे हैं लेकिन वो ये न समझे कि वो अकेले हैं।

यादव ने कहा, जब निर्वाचन आयोग सही रास्ते पर चल निकलेगा तो करोड़ों भारतवासियों का साथ उनका रक्षा कवच बन जाएगा। सत्य के मार्ग पर चलनेवालों के साथ जनता और जनविश्वास स्वयं चलने लगता है। निर्वाचन आयोग का एक सही और साहसिक कदम देश की अनंत पीढ़ियों का भविष्य और कल्याण सुनिश्चित कर सकता है। सबको अंतरात्मा की आवाज़ सुननी चाहिए। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, समाजवादी पार्टी ने वोट की डकैती के 18 हजार शपथ पत्र भारत निर्वाचन आयोग को दिए लेकिन कार्रवाई सिफर रही। उन्होंने कहा कि गलत कार्यों और कारनामों की एक लंबी फेहरिस्त बनती जा रही है, जिनका न तो अब तक कोई जवाब आया है और न ही हमारे दिए गए हलफनामों का कोई उत्तर मिला है।

मोदी सरकार का एजेंट बन गया है चुनाव आयोग : खरगे

सासाराम/भाषा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) और कथित वोट चोरी के मुद्दे को लेकर रविवार को आरोप लगाया कि चुनाव आयोग नरेन्द्र मोदी सरकार का एजेंट बनकर रह गया है। उन्होंने यहां इंडिया गठबंधन की वोट अधिकार यात्रा की शुरुआत के मौके पर आयोजित जनसभा में यह दावा भी किया कि देश की आजादी की लड़ाई में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कोई योगदान नहीं था लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले की प्राचीर से इस संगठन की तारीफ करके स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का अपमान किया। उन्होंने कहा कि एसआईआर के जरिए बिहार में गरीबों, मजदूरों, प्रवासियों, आदिवासियों और अल्पसंख्यकों के 65 लाख वोट काटे गए हैं और भाजपा-जद(यू) इन वोटों को काटकर सत्ता में आना चाहते हैं। खरगे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि वह जनता के वोट, युवाओं की नौकरी और किसानों की एमएसपी चुराते हैं।

झारखंड : प्रेमिका के परिवार के सदस्यों ने प्रेमी की गला घोंटकर हत्या की, शव रेल पटरी पर फेंका

मेदिनीनगर/भाषा। झारखंड के पलामू जिले में 22 वर्षीय एक युवक की उसकी प्रेमिका के परिवार के सदस्यों द्वारा कथित तौर पर गला घोंटकर हत्या करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि युवक की हत्या करने के बाद आरोपियों ने शव को रेलवे पटरी पर फेंक दिया ताकि इसे दुर्घटना का रूप दिया जा सके। उसने बताया कि ट्रेन की चपेट में आने से शव क्षत विक्षत हो गया। पुलिस ने बताया कि मामले के सिलसिले में उसकी प्रेमिका के परिवार के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है।

इलाज के लिए सुविधा और पैसे की कोई कमी नहीं : योगी आदित्यनाथ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

गोरखपुर (उप्र)/भाषा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को कहा कि गोरखपुर में अब उच्चस्तरीय चिकित्सा सुविधाओं और संसाधनों की कोई कमी नहीं है और जरूरतमंदों को आयुष्मान भारत योजना, मुख्यमंत्री राहत कोष तथा जनप्रतिनिधियों की निधियों के माध्यम से हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

मुख्यमंत्री 'रीजेंसी अस्पताल' के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, गोरखपुर में उच्च स्तरीय इलाज के लिए अब न तो विशेष सुविधाओं की कमी है और न ही पैसे की। यहां सुपर स्पेशलिटी सुविधाएं उपलब्ध हैं और आम नागरिक को उसका लाभ दिलाने के लिए प्रधानमंत्री-मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना (आयुष्मान) भी है। उन्होंने कहा कि यदि किसी मरीज के इलाज में आयुष्मान योजना की निर्धारित राशि अपर्याप्त होती है तो उसकी मदद मुख्यमंत्री राहत कोष और जनप्रतिनिधियों की निधियों से की जाएगी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने अस्पताल का निरीक्षण कर उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया और 'रीजेंसी माई केयर' नामक पेशेंट ऐप को भी शुरू किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने अब तक साढ़े पांच करोड़ लोगों को आयुष्मान योजना के तहत पांच लाख रुपए तक का निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि जिन लोगों को आयुष्मान या मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना का लाभ नहीं मिल पाता है, उन्हें मुख्यमंत्री राहत कोष से सहायता दी जाती है।

मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग कांग्रेस ने की थी : भाजपा विधायक

इंफाल/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक एल सुसिंड्रो मेईती ने रविवार को दावा किया कि मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग सबसे पहले कांग्रेस ने ही की थी और अब विपक्षी दल ने अपना पुराना रुख बदल दिया है।

सुसिंड्रो ने एक कार्यक्रम के इतर संवाददाताओं से कहा, हम मंत्री थे और चाहते थे कि हमारी सरकार चलती रहे। हालांकि, ऐसे लोग, जो नहीं चाहते थे कि सरकार चलती रहे, उनकी भी अच्छी खासी संख्या थी और अंततः उस सरकार को जाना पड़ा। खुरई से विधायक सुसिंड्रो का यह बयान प्रदेश कांग्रेस द्वारा लोकप्रिय सरकार की बहाली या नए चुनाव की बार-बार की जा रही मांग के बीच आया है।

पूर्व लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री सुसिंड्रो ने कहा, राष्ट्रपति शासन की मांग सबसे पहले कांग्रेस ने की थी। क्या पार्टी के सांसदों ने भी संसद में (मणिपुर में) राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग नहीं की थी? कांग्रेस नेता कहते रहते हैं कि वे पांच विधायकों के साथ क्या नहीं कर सकते। हालांकि, वे पांच विधायक सबसे ज्यादा समस्या पैदा करने वाले रहे हैं। उन पांच विधायकों को मणिपुर के हितों के अनुसार काम करना चाहिए था।

बिहार में मसौदा सूची से बाहर हुए 65 लाख मतदाताओं के नाम जिलों की वेबसाइट पर जारी : सीईसी कुमार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने रविवार को कहा कि विशेष गहन पुनरीक्षण के बाद बिहार की मसौदा मतदाता सूची से हटाए गए नामों की सूची उच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद जिलाधिकारियों की वेबसाइटों पर डाल दी गई है।

चुनावी राज्य बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को चुनौती देने वाली कई याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए, उच्चतम न्यायालय ने पिछले सप्ताह निर्वाचन आयोग से कहा था कि वह मतदाता सूची से हटाए गए 65 लाख नामों का विवरण प्रकाशित करे, साथ ही उन्हें शामिल न करने के कारण भी बताए, ताकि प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ाई जा सके। यहां संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कुमार ने कहा कि शीर्ष अदालत के निर्देश के 56 घंटे के भीतर, जिन मतदाताओं के नाम मसौदा मतदाता सूची में शामिल नहीं थे, उन्हें जिलों की वेबसाइट पर डाल दिया गया। कुमार ने यह भी रेखांकित किया कि भारत में संसद और विधानसभा चुनावों के लिए चुनाव प्रणाली कानून द्वारा परिकल्पित बहुस्तरीय, विकेन्द्रीकृत संरचना है।

आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार, निर्वाचक पंजीयन अधिकारी (ईआरओ), जो एसडीएम स्तर के अधिकारी होते हैं, बूथ स्तरीय अधिकारियों (बीएलओ) की सहायता से मतदाता सूची तैयार करते हैं और उसे अंतिम रूप देते हैं। ईआरओ और बीएलओ मतदाता सूची के त्रुटि रहित होने की जिम्मेदारी लेते हैं। कुमार ने बताया कि मसौदा मतदाता सूची के प्रकाशन के बाद, उनकी डिजिटल और भौतिक प्रतियां सभी राजनीतिक दलों के साथ साझा की जाती हैं और आयोग की वेबसाइट पर भी डाल दी जाती हैं।

बिहार में चुनाव चोरी नहीं होने देंगे : 'वोटर अधिकार यात्रा' की शुरुआत पर बोले राहुल गांधी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

सासाराम/भाषा। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने रविवार को कथित वोट चोरी के खिलाफ यहां से वोटर आधिकार यात्रा शुरू की और इस मौके पर आरोप लगाया कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के जरिए बिहार में चुनाव चोरी करने की साजिश की जा रही है, लेकिन विपक्ष इसे सफल नहीं होने देगा। उन्होंने यह दावा भी किया कि अब सबको पता चल गया है कि चुनाव आयोग भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर पूरे देश में वोट की चोरी कर रहा है।

यात्रा की शुरुआत से पहले सासाराम के बिआडा मैदान में इंडिया गठबंधन (महागठबंधन) के नेताओं की एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें राहुल गांधी के अलावा कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव, बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माले) लिबरेशन के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य, विकासशील इंसान पार्टी के प्रमुख मुकेश सहनी और महागठबंधन के कई अन्य नेता शामिल हुए। राहुल गांधी ने कहा कि यह संविधान को बचाने की लड़ाई है। उन्होंने आरोप लगाया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा संविधान को मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने महाराष्ट्र में मतदाताओं की संख्या बढ़ने का फिर से हवाला दिया और दावा किया कि सारे नए मतदाताओं के वोट भाजपा को मिले।

राहुल गांधी ने कहा कि इसके बाद बेंगलूरु की महादेवपुरा सीट पर मतदाता सूची के बारे में जानकारी एकत्र की गई। उन्होंने कहा, जब कुछ दिन पहले मैने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया तो निर्वाचन आयोग ने मुझसे हलफनामा मांगा। जब कुछ दिन पहले भाजपा के लोगों ने संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया तो उनसे कोई हलफनामा नहीं मांगा गया। उनका कहना था, चुनाव आयोग कहता है- आप हलफनामा दें कि आपका डेटा सही है। ये डेटा तो चुनाव आयोग का है, मुझसे हलफनामा क्यों मांगा जा रहा है? भाजपा के लोगों से कोई हलफनामा नहीं मांगा गया। उन्होंने आरोप लगाया कि अब इनकी आखिरी साजिश यह न कि एसआईआर के जरिए मतदाता सूची में नाम जोड़कर और नाम काटकर बिहार में चुनाव की चोरी की जाए, लेकिन ऐसा नहीं होने दिया जाएगा।

राहुल, तेजस्वी, आप लोग मिलकर भाजपा को उखाड़ फेंकिए : लालू प्रसाद

सासाराम/भाषा। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने रविवार को राहुल गांधी और तेजस्वी यादव का आह्वान किया कि वे एकजुट होकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को सत्ता से उखाड़ फेंकें। उन्होंने 'इंडिया' गठबंधन की ''वोटर अधिकार यात्रा'' की शुरुआत के मौके पर आयोजित रैली में लोगों से अपील की कि वे आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में महागठबंधन को जिताएं।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, चोरों को हटाइए, भाजपा को भगाइए। 'इंडिया' गठबंधन को जिताइए। उन्होंने कहा कि इस बार किसी भी कीमत पर भाजपा को सत्ता में आने नहीं देना है। यादव ने कहा, राहुल जी, तेजस्वी, खरगे जी, आप सब एकजुट हो जाइए और भाजपा को उखाड़ के फेंकिए, ताकि हमारा लोकतंत्र मजबूत हो सके। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माले) लिबरेशन के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने आरोप लगाया, भाजपा और चुनाव आयोग ने कई राज्यों में चुनाव चुराने के बाद यही साजिश बिहार में भी की है। उन्होंने कहा, लेकिन ये बिहार है- यहां के लोगों ने साबित कर दिया है कि हमें ये वोट चोरी किसी भी हाल में मंजूर नहीं है। विकासशील इंसान पार्टी के अध्यक्ष मुकेश सहनी ने कहा, आज जिस तरह से देश में वोट चोरी करके सरकार बनाई जा रही है, वह पूरा देश जान चुका है। बाबा साहेब अंबेडकर जी ने हमें जो हक दिया, उसे बचाने की लड़ाई लड़नी है।

कौशांबी जिले की विधायक पूजा पाल ने योगी से मुलाकात कर फिर जताया आभार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

लखनऊ/भाषा। समाजवादी पार्टी से हाल ही में पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में निष्कासित की गईं चायल विधायक पूजा पाल ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से लखनऊ स्थित उनके सरकारी आवास पर मुलाकात की। मुख्यमंत्री कार्यालय और विधायक दोनों ने शनिवार रात 'एक्स' पर इस मुलाकात के बारे में जानकारी दी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यालय ने हिंदी में एक पोस्ट में कहा, कौशांबी जिले के चायल विधानसभा क्षेत्र की माननीय विधायक पूजा पाल ने आज लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शिष्टाचार भेंट की।

योगी आदित्यनाथ से शनिवार को अपनी मुलाकात की एक तस्वीर 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए पूजा पाल ने कहा, मैं एक बार फिर माननीय मुख्यमंत्री का धन्यवाद करती हूं। उनके नेतृत्व में गुंडों और माफियाओं को उनकी सही जगह पहुंचाया जा रहा है, जो एक प्रगतिशील समाज के लिए बहुत जरूरी है। रविवार को 'एक्स' पर एक पोस्ट में पूजा ने कहा, कुछ लोग हैं जो हमेशा मेरे निजी जीवन पर टिप्पणी करते हैं, लिखते रहते हैं। मुझे कोई दिक्कत नहीं, लेकिन ये लोग सही बाते लिखें, क्योंकि मैने इनकी ही पार्टी से चुनाव लड़ा, उनके मुखिया को सब पता है...। उन्होंने कहा, मैं (अपने पति की हत्या) राजू पाल का मुकदमा न लड़ पाऊं इसके लिए मेरे साथ एक षड्यंत्र अतीक अहमद के द्वारा किया गया जिसमें मेरे खुद के परिवार के लोग शामिल थे।

पूजा पाल का विवाह प्रयागराज के शहर पश्चिमी क्षेत्र से बहुजन समाज पार्टी के विधायक राजू पाल से 2005 में हुआ था और विवाह के नौवें दिन राजू पाल की हत्या कर दी गई थी। राजू पाल की हत्या में फूलपुर के पूर्व सांसद अतीक अहमद और उनके पूर्व विधायक भाई अशरफ को आरोपी बनाया गया। इन दोनों की अप्रैल 2023 में प्रयागराज में एक अस्पताल में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उन्होंने विधायक राजू पाल की हत्या के काफी समय बाद (ब्रजेश वर्मा से) अपने दूसरे विवाह की चर्चा करते हुए पोस्ट में कहा कि अब उनकी (अतीक अहमद की) भी हत्या हो चुकी है और उसके बाद मेरे परिवार के ही भाई ने मेरा मुकदमा (पाल हत्याकांड) लिया। उन्होंने कहा, मुकदमा लड़ने वाले भाई ने कहा कि आप विवाह कर लीजिए, हम आपके साथ हैं। पूजा पाल ने अपने दूसरे पति और रिश्तेदारों की मिली भगत की ओर संकेतों में पोस्ट में कहा, जब विवाह हो गया तो मुझे शादी के कुछ दिनों बाद सचाई का पता चला, क्योंकि यही लोग फिर कहीं बैठ कर यह बातें कर रहे थे कि अब अतीक के खिलाफ मुकदमा खत्म हो जाएगा, लेकिन मैं अपने इस इरादे से डिगी नहीं।

विधायक पाल ने कहा, मुझे यह पता चला कि ये लोग सच में मेरे साथ एक षडयंत्र रचे हैं। तब मैंने इसका विरोध किया और इसके बाद मैने जांच की तो बातें सच निकलीं और इसके बाद मैंने अदालत के माध्यम से अपने विवाह के अलगाव के लिए अर्जी भी दी। पाल ने कहा, अब जब मैने भरी विधानसभा में सच बोल दिया तब सब कुछ पता होने के बावजूद भी चिढ़ और प्रतिशोध में कुछ लोग इसमें लगे हैं कि सिर्फ और सिर्फ मेरी छवि कैसे धूमिल की जाए। उन्होंने कहा, मेरी शहर पश्चिमी और चायल की जनता को मेरा दुख, मेरी तकलीफ, सब कुछ पता है, मैंने सबको बताया हुआ है, इसलिए जनता का साथ आज भी मेरे साथ है।

झारखंड भाजपा के जांच दल ने सूर्या हंसदा की मौत के पीछे साजिश का संदेह जताया

गोड्डा (झारखंड)/भाषा। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की झारखंड इकाई के सात सदस्यीय 'जांच दल' ने रविवार को कहा कि उसे सूर्य नारायण हंसदा उर्फ सूर्या हंसदा की ''मुठभेड़'' में हुई मौत के पीछे ''बड़ी साजिश'' का संदेह है।

हंसदा कई आपराधिक मामलों में वांछित था और उसने विभिन्न राजनीतिक दलों के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ा था। पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा के नेतृत्व में भाजपा के जांच दल ने अपनी जांच के तहत रविवार को गोड्डा जिले के लालमटिया के डकैता गांव में हंसदा के परिवार से मुलाकात की।

जांच के बाद मुंडा ने मांग की कि राज्य सरकार झारखंड उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की निगरानी में मामले की पारदर्शी जांच का आदेश दे।

विपक्ष की ओर से उठाए जा रहे मुद्दों से भाग रही केंद्र सरकार : डेरेक ओ ब्रायन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नई दिल्ली/भाषा। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के राज्यसभा सदस्य डेरेक ओ ब्रायन ने केंद्र सरकार पर विपक्ष की ओर से उठाए गए मुद्दों से भागने का आरोप लगाते हुए रविवार को कहा कि वह (सरकार) शेष मानसून सत्र में भी संसद का 'मखौल' उड़ाना जारी रखेगी। तृणमूल कांग्रेस नेता ने यह टिप्पणी सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर की। स्वतंत्रता दिवस और अन्य त्योहारों की छुट्टी के बाद संसद का मानसून सत्र सोमवार को फिर से शुरू होगा।

ओ ब्रायन ने कहा, मोदी नीत गठबंधन घबराया हुआ है और वह हर सत्र में विपक्ष की ओर से उठाए गए राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर चर्चा करने से भागता है। पूर्वानुमान है कि इस सत्र के आखिरी चार दिनों में भी सरकार संसद का मखौल उड़ाती रहेगी। तृणमूल नेता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' पर कटाक्ष करते हुए कहा, यह संसद है, मन की बात नहीं। ओ ब्रायन ने निर्वाचन आयोग के बारे में 'पीटीआई-भाषा' से कहा, यह संस्था खुद को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शाखा कार्यालय के रूप में मजबूती से स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। सभी विपक्षी दल बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान पर चर्चा की मांग कर रहे हैं।

असम सरकार ने विश्वनाथ जिले में बेदखली अभियान चलाया, 309 परिवार विस्थापित

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

तेजपुर/भाषा। असम सरकार ने रविवार को विश्वनाथ जिले में बेदखली अभियान शुरू किया, जिसके तहत 309 परिवार विस्थापित हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों के मुताबिक जापारीगुड़ी के विलेज ग्राजिंग रिजर्व (वीजीआर) में लगभग 175 बीघा या 23 हेक्टेयर भूमि पर अतिक्रमण हटाने के लिए सुबह बेदखली अभियान शुरू किया गया।

जिला आयुक्त सीमांत कुमार दास ने कहा, बेदखली अभियान शांतिपूर्ण ढंग से चल रहा है। कुल 309 परिवारों ने 175 बीघा जमीन पर कब्जा कर रखा था। उन्हें एक अगस्त को 15 दिनों के भीतर जमीन खाली करने के नोटिस जारी किए गए थे। उन्होंने कहा कि सभी परिवार पहले ही क्षेत्र छोड़ चुके हैं, तथा उनमें से कई ने अपने मकान भी तोड़ दिए हैं। जिला आयुक्त ने कहा, हमने बाकी घर तोड़ दिए। वहां एक बड़ा चाय बागान भी था। उसे अब बाद में वृक्षारोपण अभियान के लिए तोड़ा जा रहा है।

विश्व कप में हमें स्पिन गेंदबाजों का काफी अधिक सामना करना पड़ेगा : हीली

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

ब्रिसबेन/भाषा। ऑस्ट्रेलिया की अनुभवी खिलाड़ी एलिसा हीली ने माना है कि रिकॉर्ड आठवीं बार विश्व कप जीतने के लिए उनकी टीम को भारतीय उपमहाद्वीप में स्पिन गेंदबाजों की चुनौती से बड़े पैमाने पर निपटना होगा।

महिला विश्व कप का आयोजन अगले महीने भारत और श्रीलंका में होगा। इस विश्व कप में गत चैंपियन ऑस्ट्रेलिया की स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज पर सबकी निगाहें होंगी। हीली ने भारत ए के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया ए का प्रतिनिधित्व करते हुए तीन मैचों की श्रृंखला के आखिरी वनडे में नाबाद 137 रन की पारी के साथ लय में वापसी की। उनकी इस पारी से टीम सांत्वना जीत दर्ज करने में सफल

रही। ऑस्ट्रेलिया ए इस श्रृंखला को 1-2 से हार गया लेकिन हीली ने सलामी बल्लेबाज की भूमिका निभाते हुए सबसे ज्यादा रन बनाये। हीली ने श्रृंखला के दूसरे मैच में भी 91 रन की पारी खेली थी। वह अनुभवी स्पिनरों से सजी भारत ए के गेंदबाजों से निपटने में काफी सफल रहीं।। भारत ए की टीम में राधा यादव, मिन्नु मणि, तनुजा कंवर और प्रेमा रावत जैसी स्पिनर शामिल थीं। प्रेमा तीसरे वनडे की अंतिम एकादश का हिस्सा नहीं थी। हीली ने क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू से कहा, भारत ए की इस की टीम में स्पिनरों की भरमार है। हमें आगामी विश्व कप में भी इसी तरह की टीमों का सामना करना पड़ेगा। वहां भी बीच के ओवरों में स्पिन का ही दबदबा रहेगा। ऑस्ट्रेलिया ए ने रविवार को भारत ए की पारी में 217 रन पर समेटने के बाद महज 28 ओवर में एक विकेट विकेट गंवाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। हीली ने सलामी बल्लेबाज तहलिया विलसन (51 गेंद में 59 रन) के साथ महज 16.1 ओवर में 137 रन की साझेदारी कर टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई।

दादी को बचाने की कोशिश के दौरान सांप ने बच्चे को काटा, मौत

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बलिया (उप्र)/भाषा। बलिया जिले के बांसडीह क्षेत्र में अपनी दादी को बचाने की कोशिश में सर्पदंश से 11 साल के बच्चे की मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, बांसडीह कोतवाली क्षेत्र के दराव गांव में शुक्रवार रात अनुज (11) अपनी दादी के साथ घर में चौकी पर सोया हुआ था और रात करीब 11 बजे अनुज की नींद अचानक खुल गई तो उसने देखा कि एक सांप उसकी दादी के पेट पर बैठा हुआ है।

उनके मुताबिक, अनुज ने दादी को बचाने के लिए सांप को हटाने की कोशिश की लेकिन इस दौरान सांप ने अनुज को डस लिया। उन्होंने बताया कि अनुज की चीख सुनकर परिजन जाग गए और आनन-फानन में उसे बांसडीह के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए, मगर गम्भीर हालत को देखते हुए डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि हालांकि अस्पताल पहुंचने से पहले ही उसकी मौत हो गई।

सुविचार

सकारात्मक सोच हमेशा सफलता की ओर ले जाती है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

'विकसित भारत' की रूपरेखा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस के भाषण में 'विकसित भारत' बनाने के लिए भविष्य की रूपरेखा पेश की है। उन्होंने जिन बिंदुओं का उल्लेख किया, उन पर दृढ़ता से काम होना चाहिए। इंटरनेट के इस दौर में जब नागरिक यह देखते हैं कि विकसित देशों में लोगों के पास कितनी सुविधाएं हैं, तो वे भी चाहते हैं कि हमारा देश उन्नति करे। अगर सरकार का संकल्प दृढ़ हो और देशवासियों में एकता की भावना मजबूत हो तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता। प्रधानमंत्री ने सत्य कहा है कि 'एक राष्ट्र के लिए आत्मसम्मान की सबसे बड़ी कसौटी आज भी उसकी आत्मनिर्भरता है।' हमें हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना पड़ेगा। आज जिस तरह कुछ अंतरराष्ट्रीय ताकतें धन के अहंकार में हमें आंखें दिखा रही हैं, उसके बाद आत्मनिर्भरता हमारे लिए अनिवार्यता है। इसका कोई विकल्प नहीं है। जैसे-जैसे देश की अर्थव्यवस्था बढ़ रही है, ऊर्जा की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। भारत सरकार ने सौर ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन में करोड़ों रुपए का निवेश कर दूरदर्शितापूर्ण फैसला लिया है। पिछले 11 वर्षों में सौर ऊर्जा में 30 गुणा बढ़ोतरी होना बताता है कि भारत स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसके लिए देशवासियों में जागरूकता बढ़ रही है। भारत ने स्वच्छ ऊर्जा के लिए वर्ष 2030 तक 50 प्रतिशत का लक्ष्य रखा था, जो वर्ष 2025 में ही हासिल कर लिया। यूपीआई के प्रदर्शन ने दुनिया को अचंभित कर दिया है। रियल टाइम ट्रांजैक्शन में 50 प्रतिशत अकेला भारत यूपीआई के माध्यम से कर रहा है! भविष्य में इसमें और बढ़ोतरी होने की भरपूर संभावना है। भारत ने डिजिटल पेमेंट के क्षेत्र में जो प्रगति की है, उससे विकसित देश भी सीख सकते हैं।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में 'स्वदेशी' चीजों को बढ़ावा देने पर खास जोर दिया है। वे पहले भी विभिन्न मंचों से यह आह्वान करते रहे हैं। अब उनके द्वारा दिए गए सुझाव कि देश में ऐसे व्यापारी आगे आएं, जो यह बोर्ड लगाएं कि 'यहां स्वदेशी माल बिकता है', ने स्वतंत्रता संग्राम के दिनों की यादें ताजा कर दीं। उस समय राष्ट्रवादी विचारों के समर्थक कई व्यापारी ऐसा करते थे। अगर आप उस दौर में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएं देखेंगे, जो अब कई डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं, तो उनमें यह अपील नजर आएगी। कई व्यापारी अपने विज्ञापनों में लिखते थे- 'सिर्फ हिंदुस्तानी माल उपलब्ध।' ऐसा आज भी हो सकता है। इसके लिए उचित माहौल के साथ स्वदेशी चीजों की गुणवत्ता में बहुत सुधार करना पड़ेगा। अब उपभोक्ता की पसंद और विचारों में बहुत बदलाव आ गया है। उसके सामने ढेरों विकल्प मौजूद हैं। ऐसे में वह उसी चीज को खरीदना चाहेगा, जिसकी गुणवत्ता बेहतर हो, जो उसके बजट में हो और जिस तक पहुंच आसान हो। प्रधानमंत्री ने जिस डेमोग्राफी मिशन को शुरू करने की बात कही है, उसकी प्रतीक्षा लोग वर्षों से कर रहे थे। सरकार को इस ओर बहुत गंभीरता से ध्यान देना होगा। देश के लिए आर्थिक समृद्धि जरूरी है, लेकिन उसकी सुरक्षा उसी सूरत में हो सकती है, जब डेमोग्राफी सुरक्षित हो, देश सुरक्षित हो। किसी ज़माने में काबुल, कंधार, पेशावर, लाहौर, कराची, ढाका जैसे शहरों में हमारे पूर्वजों की बड़ी-बड़ी हवेलियां थीं। जब डेमोग्राफी बदली तो रातोंरात सबकुछ छोड़कर आना पड़ा था। आज भी कई इलाकों की डेमोग्राफी बदलने की शिकायतें आ रही हैं। उन्हें यूं ही खारिज नहीं किया जा सकता। सरकार को चाहिए कि वह घुसपैठियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करे, उन्हें उनके देश रवाना करे। अन्यथा भविष्य में कई गंभीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

ट्वीटर टॉक

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर के तत्वावधान में डाईट परिसर, कोटा में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं हेतु अंग उपकरण वितरण कैंप का सफल आयोजन किया गया तथा नेत्रहीन छात्रा विद्या को अध्ययन के लिए किट भी सौंपा।

-मदन दिलावर

मुख्यमंत्री कार्यालय में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य की समीक्षा की। उपस्थित अधिकारियों को बजट घोषणाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, निर्धारित समयसीमा में कार्य पूर्ण करने तथा आमजन तक योजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए।

-भजनलाल शर्मा

आज उपखण्ड कार्यालय, गुलाबपुरा में भीलवाड़ा जिले के सार्वजनिक निर्माण विभाग, पर्यटन विभाग एवं महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक कर जिले में चल रहे विकास कार्यों एवं जनकल्याणकारी योजनाओं और बजट घोषणाओं की प्रगति की समीक्षा की।

-दीया कुमारी

प्रेरक प्रसंग

उठाने वाला महान

एक बार एक ऋषि अपने शिष्यों के साथ लंबी यात्रा पर निकले। कई पहाड़ियां और मैदान पार करके वे एक जनजातीय इलाके में पहुंचे। वहां एक बड़ा मेला लगा हुआ था। शिष्यों ने वहां मेला देखने की इच्छा जाहिर की। शिष्यों का मन रखने को ऋषि वहां पहुंचे। ग्रामीणों ने ऋषि को बताया कि यहां मुकाबले के लिए एक महान पहलवान आने वाले हैं। आज पहलवानों का एक बड़ा मुकाबला है। दूर-दूर देशों से पहलवान यहां दम ठोकने वाले हैं। तब ऋषि अपने शिष्यों के साथ मुकाबला देखने की प्रतीक्षा करने लगे। फिर ढोल-नगाड़ों के साथ एक विशालकाय पहलवान अखाड़े में पहुंचा। उसका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। पूरे अहंकार के साथ पहलवान आयोजन स्थल पर पहुंचा। उसने एक ऊंची हुंकार भरी और एक-एक करके दूसरे पहलवानों को गिराना शुरू कर दिया। यह देखकर ऋषि का मन खिन्न हुआ। उन्होंने कहा कि ये पहलवान महान कैसे हो सकता है। महान वह होता है जो गिरे लोगों को उठाता है। ये तो अच्छी सेहत का दंभ है। अहंकार है और दूसरों को नीचा दिखाने का उपक्रम है। शिष्यों ने ऋषि से सहमति जतायी और दूसरे गांव के लिये आगे निकल गए।

सामयिक

देश विभाजन के दोषी कौन ?

प्रमोद भार्गव
मोबाइल : 9981961100

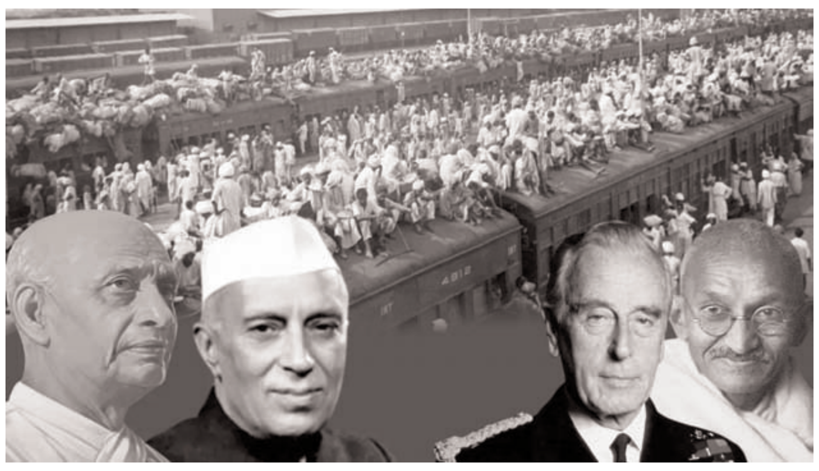

भारत में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस के मौके पर जारी एक विशेष पाठ में भारत के बंटवारे के लिए मोहम्मद अली जिन्ना, कांग्रेस और तत्कालीन ब्रिटिश वायसराय लार्ड माउंटबेटन को जिम्मेदार ठहराया है। पाठ में यह भी उल्लेख है कि विभाजन के बाद कश्मीर नई समस्या के रूप में पेश आया। भारत में यह समस्या पहले कभी मौजूद नहीं थी। इसने देश की विदेश नीति के लिए चुनौती बनाए रखी। नतीजतन कुछ देश पाकिस्तान को सहायता देते रहते हैं और कश्मीर मुद्दे के नाम पर भारत पर दबाव बनाते रहते हैं। वस्तुतः भारत का विभाजन गलत विचारों के कारण हुआ। भारतीय मुसलमानों की पार्टी मुस्लिम लीग ने 1940 में लाहौर में एक सम्मेलन आयोजित किया। इसमें जिन्ना ने कहा कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग धार्मिक दर्शन, सामाजिक रीति-रिवाज से संबंधित हैं। अतएव एक साथ नहीं रह सकते। एनसीईआरटी के विशेष पाठ में विभाजन के अपराधी शीर्षक वाले खंड में कहा है कि अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत का बंटवारा हुआ। किंतु यह किसी एक व्यक्ति का काम नहीं था। इसके लिए तीन कारण जिम्मेदार थे, एक जिन्ना, जिन्होंने बंटवारे की मांग की। दूसरे कांग्रेस, जिसने बंटवारे को स्वीकार किया और तीसरे माउंटबेटन जिन्होंने इस पर अमल किया। माउंटबेटन एक बड़ी भूल के दोशी साबित हुए।

एनसीईआरटी ने उक्त दो पार्ट छापे हैं। इनमें छठी कक्षा से आठवीं के लिए और नौवीं कक्षा से बारहवीं के लिए एक-एक पाठ हैं। ये अंग्रेजी और हिंदी में पूरक पाठ हैं, नियमित पाठ्य पुस्तकों में नहीं हैं। इसलिए इनका प्रयोग परियोजनाओं, पोस्टरों और वाद-विवादों के माध्यम से किया जाना है। ये दोनों पाठ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2021 में दिए गए संदेश के साथ शुरू होते हैं, जिसमें विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस मनाने की घोषणा की गई थी। साफ है, ये पाठ पूरे देश में वाद-विवाद का ऐसा हिस्सा बनें, जिससे लोग जान सकें कि वास्तव में विभाजन के अपराधी कौन हैं। केंद्र सरकार इस उद्देश्य की पूर्ति में सफल होती दिख रही है।

दरअसल स्वतंत्रता संघर्ष के बीच महात्मा गांधी ने आत्मविश्वास से कहा था कि अगर कांग्रेस बंटवारे को स्वीकार करना चाहती है तो उसे मेरी लाश के ऊपर से गुजरना होगा। जब तक मैं जीता हूं, मैं कभी भी हिन्दुस्तान का बंटवारा स्वीकार नहीं करूंगा और जहां तक मेरा वश चलेगा कांग्रेस को भी स्वीकार नहीं करने दूंगा। अलबत्ता ऐसा एकाएक क्या हुआ कि जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल को बंटवारे के समर्थन में खड़े होना पड़ गया। लार्ड माउंटबेटन से पहली मुलाकात में ही गांधी उनके वाग्जाल की गिरफ्त में ऐसे आए कि उनकी प्राण जाए, पर वचन न जाए, की वचनबद्धता भंग हो गई। कांग्रेस मुस्लिम अलगाववाद के आगे घुटने टेकती चली गई। नतीजतन भारत और पाकिस्तान स्वतंत्रता अधिनियम पर ब्रिटिश संसद में मोहर लगा दी गई। ब्रितानी हुकूमत में औपनिवेशिक दासता झेल रहे अखंड भारत को विभाजित कर दो स्वतंत्र देश बनाकर पृथक-पृथक सत्ता का हस्तांतरण करने का निर्णय ले लिया। संपूर्ण सत्ता सौंपने का दिन 14 अगस्त 1947 निश्चित किया। यह दिन भी एक तरह से दोनों देशों के स्वतंत्रता सेनानियों को चिढ़ाने की दृष्टि से मुकर्रर किया गया, क्योंकि इसी दिनांक को जापान मित्र देशों के समक्ष आत्मसमर्पण करने को मजबूर हुआ था।

अंग्रेजों द्वारा अपनी सत्ता कायम रखने की दृष्टि से बंगाल-विभाजन एक ऐसा षड्यंत्रकारी घटनाक्रम रहा जो भारत विभाजन की नींव डाल गया। इस बंटवारे के फलस्वरूप अंग्रेजों के विरुद्ध ऐसी उग्र जन-भावना फूटी की बंग-भंग विरोध में एक बड़ा आंदोलन खड़ा हो गया। दरअसल जब गोरी पलटन ने समूचे भारत को अपनी अधीनता में ले लिया, तब क्रांतिकारी संगठनों और विद्रोहियों के साथ कठोरता बरतने के लिए 30 सितंबर 1898 को भारत की धरती पर वाइसराय लॉर्ड कर्जन के पैर पड़े। कर्जन को 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरणा ले रहे क्रांतिकारियों के दमन के लिए भेजा गया था। इस संग्राम पर नियंत्रण के बाद फिरंगी इस बात को लेकर चिंतित व सर्तक थे, कि कहीं इसकी राख में दबी चिंगारी फिर न सुलग पड़े। क्योंकि अंग्रेज भली भांति जान गए थे कि 1857 का सिलसिला टूटा नहीं है। अंग्रेजों को यह भी शंका थी कि कांग्रेस इस असंतोष को पनपने के लिए खाद-पानी देने का काम कर रही है। कर्जन ने अंग्रेजी सत्ता के संरक्षक बने मुखबिरों से ज्ञात कर लिया कि इस असंतोष को सुलगाए रखने का काम बंगाल से हो रहा है। वाकई स्वतंत्रता की यह चेतना बंगाल के जनमानस में एक बेचैनी बनकर तैर रही थी। यह बेचैनी 1857 के संग्राम जैसे रूप में फूटे, इससे पहले कर्जन ने कुटिल क्रूरता के साथ 1905 में बंगाल के दो टुकड़े कर दिए। जबकि इस बंग-भंग का विरोध हिंदू और मुसलमानों ने अपनी जान की बाजी लगाकर किया था। इस बंटवारे का मुस्लिम बहुल क्षेत्र को पूर्वी बंगाल और हिंदू बहुल इलाके को बंगाल कहा गया। अर्थात जिस भूखंड पर हिंदू-मुस्लिम संयुक्त भारतीय नागरिक के रूप में रहते चले आ रहे थे, उनका मानसिक रूप से सांप्रदायिक विभाजन कर दिया। इय विभाजन से सांप्रदायिक भावना की एक तरह से बुनियाद डाल दी गई, वहीं दूसरा इसका सकारात्मक परिणाम यह निकला कि पूरे भारत में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष तेज हो गया। यानी फिरंगी-सत्ता के विरुद्ध एकजुटता ने देशव्यापी उग्र भावना का संचार अनजाने में कर दिया। लेकिन कर्जन ने इसे कुटिल चतुराई से मुस्लिम लीग की स्थापना में बदल दिया।

यही नहीं कर्जन ने अपने वाकचातुर्य से ढाका के नवाब सलीमुल्ला को बंगाल विभाजन का समर्थन और अचानक उदय हुए स्वदेशी आंदोलन का बहिष्कार करने के लिए राजी कर लिया। सलीमुल्ला कर्जन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने सक्रिय होकर कुछ नवाबों को बरगलाकर दिसबंर 1906 में मुस्लिम लीग संगठन खड़ा कर दिया। स्वदेशी आंदोलन को विफल करने के लिए अंग्रेज अधिकारियों ने सलीमुल्ला के साथ मिलकर हिंदू-मुस्लिमों के बीच संप्रदाय के आधर पर दंगे भड़काने का काम भी शुरू कर दिया। यहीं से हिंदुओं की हत्या करने और उनकी संपत्ति लूटने व हड़पने का सिलसिला शुरू हो गया। इस दुर्विनार स्थिति के निर्माण होने पर ब्रिटिश पत्रकार एच डब्ल्यू नेविंसन ने गार्जियन अखबार में लिखा, ब्रिटिश न्यायिक अधिकारी जानबूझकर हिंदुओं पर अत्याचार के साक्ष्यों को नजरअंदाज करते हैं और मुस्लिमों के कथन पर एक तरफा यकीन करते हैं।

गवर्नर जनरल और वायसराय मिंटो ने मुस्लिम पृथकतावादियों के साथ मिलकर एक नई चाल चली। इसके तहत बंग-भंग विरोध आंदोलन को देश के एक मात्र मुस्लिम-प्रांतष की खिलाफत के आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। नतीजतन मुस्लिम नेता पूरी ताकत से बंटवारे के समर्थन में आ खड़े हुए। इसी समय आगा खान के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल मिंटो से शिमला में मिला और मुस्लिमों के लिए पृथक मतदाता सूची बनाए जाने की मांग उठा दी। मिंटो इस मंशा पूर्ति के लिए ही भारत भेजे गए थे कि मुस्लिमों को हिंदुओं के विरुद्ध एक समुदाय के रूप में खड़ा किया जाए। अतएव मिंटो ने नगर पालिकाओं, जिला मंडलों और विधान परिषदों में मुस्लिमों की संख्या आबादी के अनुपात में बढ़ाने की पहल कर दी। यही नहीं मुस्लिमों को महत्व ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति वफादारी के आधार पर भी रेखांकित की गई। इसी कालखंड में हिंदुओं के खिलाफ मुल्लाओं ने घृणित प्रचार की कमान अपने हाथ में ले ली। एक लाल पुस्तिका छापी गई। जिसमें कहा गया कि हिंदुओं ने इस्लाम के गौरव को लूटा है। उन्होंने हमारा धन और सम्मान लूटा है। स्वदेशी का जाल बिछाकर हमारी जान लेना चाहते हैं। इसलिए वो मुसलमानों एहिंदुओं के पास अपना धन मत जाने दो। हिंदुओं की दुकानों का बहिष्कार करो। वह सबसे नीच होगा, जो उनके साथ वंदे मातरम कहेगा। इस सब के बावजूद कांग्रेस को उच्च शिक्षित वकील जिन्ना से समन्यवादी सहयोग की उम्मीद थी। जिन्ना के नेतृत्व में शिक्षित व युवा मुस्लिम सहयोगी बने भी रहे। लेकिन ब्रितानी हुकूमत के पास हिंदू-मुस्लिम एकता और सद्भावना नष्ट-भृष्ट करने की औजार थी। अतएव 1909 में मोर्ले-मिंटो सुधारों के अंतर्गत मुस्लिमों के लिए अलग मतदाता सूची की मांग मंजूर कर ली गई। इस पहल ने हिंदू-मुस्लिम एकता की राह में स्थायी दरार उत्पन्न कर दी।

लॉर्ड माउंटबेटन इतना चतुर निकला कि उसने विभाजन के लिए जिन्ना, नेहरू, पटेल और यहां तक की गांधी को भी मना लिया। भारत को दो स्वतंत्र राष्ट्रों में भारत और पाकिस्तान में विभाजित कर दिया गया। यही नहीं पंजाब और बंगाल को भी कपड़े की तरह दो टुकड़ों में चीर दिया गया,जिससे भारत हमेशा गृह कलह की आंच से सुलगता रहे। यह पाकिस्तान के अस्तित्व से भी ज्यादा खतरनाक था। ब्रिटिश अधिकारियों ने जानबूझ कर 652 भारतीय रियासतों की प्रभुसत्ता उन्हें वापस सौंप दी।

6 दिसंबर 1946 ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने भारत में एक तीन सदस्यीय शिष्टमंडल भेजा। ये लार्ड लारेंस, स्टेफर्ड क्रिप्स और एवी अलेक्जेंडर थे। इन्हें शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण के लिए भेजा गया था। इस मिशन ने कांग्रेस और लीग के प्रतिनिधियों से बातचीत की और सांप्रदायिक दंगों को रोकने के लिए हिंदू-मुस्लिमों के बीच साझा सत्ता की योजना को मूर्त रूप देना चाहा। इस संवाद में अनेक विरोधाभासी पहलू सामने आए। जिन्ना भारत के साथ रहना तो चाहते थे, लेकिन संविधान में मुसलमानों को विशेष राजनीतिक संरक्षण गारंटी चाहते थे। जिसमें हिंदूओं के साथ बराबरी की मांग प्रमुख थी। यही वह दौर था, जिसमें ठीक दीपावली पर्व के बीच नोआखली में भयंकर सांप्रदायिक दंगे भड़के। मुस्लिम बहुल इलाके में हिंदू नरसंहार, मंदिरों का विध्वंस और आगजनी की दर्जनों घटनाएं घटी। हिंदू महिलाओं का अपहरण, दुष्कर्म और धर्मांतरण कराकर जबरन विवाह भी रचाए गए। इन घटनाओं से गांधी को जबरदस्त सदमा पहुंचा और शांति के लिए नोआखली पहुंच गए। बहरहाल कैबिनेट मिशन की शिमला बैठक में कोई कारगर परिणाम नहीं निकला।

लॉर्ड माउंटबेटन इतना चतुर निकला कि उसने विभाजन के लिए जिन्ना, नेहरू, पटेल और यहां तक की गांधी को भी मना लिया। भारत को दो स्वतंत्र राष्ट्रों में भारत और पाकिस्तान में विभाजित कर दिया गया। यही नहीं पंजाब और बंगाल को भी कपड़े की तरह दो टुकड़ों में चीर दिया गया,जिससे भारत हमेशा गृह कलह की आंच से सुलगता रहे। यह पाकिस्तान के अस्तित्व से भी ज्यादा खतरनाक था। ब्रिटिश अधिकारियों ने जानबूझ कर 652 भारतीय रियासतों की प्रभुसत्ता उन्हें वापस सौंप दी। उन्हें भारत या पाकिस्तान मिल जाने की छूट तो थी ही, स्वतंत्र राष्ट्र बने रहने की छूट भी दे दी गई थी। अर्थात भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ विभाजन तो आधा सच है, पूरा सच तो देश के 652 टुकड़े कर देने का बन गया था। जिसे पटेल ने संभाला और रियसतों का विलय भारतीय गणतंत्र में हो पाया। अतएव जिन दो पाठों में जिन्ना, कांग्रेस और लाउंटबेटन को दोशी ठहराया गया है, वह कोई केंद्र की वर्तमान सरकार का झूठ नहीं, अपितु ऐतिहासिक सत्य है, जो निष्पक्ष भाव से लिखे स्वतंत्रता आंदोलन की इतिहास पुस्तकों में पूर्व से ही दर्ज है।

नजरिया

संघ की तारीफ से हक्के बक्के हुए विरोधी

बाल मुकुन्द ओझा
मोबाइल : 9414441218

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जमकर तारीफ करने से संघ विरोधी हक्के बक्के रह गए है। मौका था स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से मोदी के सम्बोधन का। ऐसा पहली बार हुआ जब मोदी ने आज़ादी के मुख्य समारोह में संघ के सौ सालों की उपलब्धियों की खुले मन से सराहना की। मोदी ने कहा कि सेवा, समर्पण, संगठन और अप्रतिम अनुशासन इस संगठन की पहचान रही हैं। मोदी ने कहा संघ दुनिया का सबसे बड़ा गैर सरकारी संगठन (छत्रज) है और राष्ट्र निर्माण के काम में जुटा है। संघ की तारीफ से विरोधी हक्के बक्के रह गए है। उन्होंने इसे संविधान और तिरंगे का अपमान बताया। सियासी क्षेत्रों में कहा जा रहा है भाजपा और संघ के मध्य दूरी की जो अफवाहें फैलाई जा रही थी, उसपर अब पूरी तरह विराम लग गया है। ऐसा समझा जाता है कि मोदी के भाषण के बाद भाजपा को नया अध्यक्ष शीघ्र मिलने की संभावना है। इसके साथ ही उपराष्ट्रपति पद के लिए फैली भ्रांतियां भी दूर होंगी। गौरतलब है पिछले कुछ अर्से से यह भ्रान्ति फैलाई जा रही थी कि भाजपा और संघ के मध्य मतभेदों की खाई उत्पन्न हो गई है और संघ मोदी के पैर कतरने की तैयारी कर रहा है। मगर मोदी के भाषण से स्पष्ट है मोदी और संघ एक ही सिक्के के दो पहलू है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार ने विजयादशमी के दिन 1925 में की थी और इस वर्ष इसका शताब्दी वर्ष है। आज देश भर के 922 जिलों, 6597 खंडों और 27,720 मंडलों में संघ की 83 हजार से अधिक शाखाएं हैं। यह विश्व का सबसे विशाल संगठन है। समाज के हर क्षेत्र में संघ की प्रेरणा से विभिन्न संगठन चल रहे हैं जो राष्ट्र निर्माण तथा हिंदू समाज को संगठित करने में अपना योगदान दे रहे हैं। संघ के विरोधियों ने तीन बार 1948 1975 व 1992 में इस पर प्रतिबंध लगाया, लेकिन तीनों बार संघ पहले से भी अधिक मजबूत होकर उभरा। सर्वोच्च न्यायालय ने अपने अनेक निर्णयों में माना है कि संघ एक सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन है।

आजादी के बाद से ही कांग्रेस के निशाने पर रहा है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। लाख चेष्टा के बावजूद कांग्रेस संघ को समाप्त करना तो दूर हाशिये पर लाने में सफल नहीं हुआ। संघ को खत्म करने के चक्कर में खुद कांग्रेस अपना वजूद समाप्त करने की ओर अग्रसर है। बापू की हत्या के आरोप सहित कई बार प्रतिबन्ध की मार झेल चुका यह संगठन आज भी लोगों के दिलों में बसा है और यही कारण है की इसका एक स्वयं सेवक प्रधान मंत्री की कुर्सी पर काबिज है और अनेक स्वयं सेवक राज्यों के मुख्यमंत्री है। संघ सांप्रदायिक है या देशभक्त यह दंश आज भी सियासत पाले हुए है मगर यह सच है की देश की बहुसंख्यक जनता के दिलों में संघ अपना स्थान बना चुका है। समाजवादी नेता डॉ राम मनोहर लोहिया के बाद जयप्रकाश नारायण अकेले व्यक्ति हैं जिन्होंने आरएसएस को देश की मुख्यधारा में वैधता दिलाने और 'गांधी के हत्यारे' की छवि से बाहर निकालने में सबसे अहम भूमिका निभाई। बाद में यही कार्य जॉर्ज फर्नांडीज ने किया।

उल्लेखनीय है लोकसभा चुनावों में संघ के स्वयंसेवक चुनावी गतिविधियों से दूर रहे जिसका खामियाज़ा अन्तोगत्वा भाजपा को भुगतना पड़ा। हरियाणा चुनाव में संघ ने अपनी रणनीति बदली और संघ के कार्यकर्ताओं ने घर घर जाकर भाजपा के पक्ष में माहौल बनाया जिससे कांग्रेस जीती हुई बाज़ी हार गई। इसी भांति महाराष्ट्र में संघ के कार्यकर्ताओं ने अपना सक्रीय समर्थन भाजपा को दिया और भाजपा भगवा झंडा फहराने में सफल हुई। देश की राजधानी दिल्ली को आम आदमी पार्टी के शिकंजे से मुक्त कराने में भी संघ ने अपनी पूरी ताकत झोंकी जिससे भाजपा को अपने विजय अभियान में जोरदार सफलता मिली। तीनों ही चुनावों में संघ ने बिना शोर शराबे अपना काम बहुत चतुराई से किया। कहा जाता है सियासत में ''जो दिखता है, वो होता नहीं, और जो होता है, वो दिखता नहीं'' यह बात पूरी तरह संघ पर लागू होती है। विरोधी समझते इससे पहले ही संघ ने अपना काम कर दिया। संघ ने कई बार यह स्पष्ट किया है कि उनका संगठन राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेता मगर कार्यकर्त्ता अपना समर्थन भाजपा को देते है तो उसे कोई एतराज़ नहीं है। यही हुआ लोकसभा चुनावों में जो कार्यकर्त्ता सक्रीय नहीं थे उन्होंने विधानसभा सभा चुनावों में चुपचाप अपना करिश्मा दिखा दिया। संघ के एक विचारक का कहना था महाराष्ट्र और दिल्ली में कुछ राजनैतिक दल लगातार संघ के विरोध में अनाप शनाप बोल रहे थे जिसके विरोधस्वरूप संघ के कार्यकर्ताओं ने अपने विरोधियों को उनकी औकात दिखा दी।

महत्त्वपूर्ण
Printed& Published by Devendra Sharma on behalf of owners M/s. New Media Company,6/4 , Ist floor, Cantonment station road, Bengaluru-51and printed at Dinasudar Printing Division, 116, Queens Road, Bengaluru-560052. **Editor-Shreekant Parashar**, (*Responsible for selection of news under PRB Act.) Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.**RNI No. 58061/93. Regn No.: RNP/KA/BGS/2050/2015-2017 posted at Bengaluru PSO Mysore Road Bengaluru-560 026**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टैंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।– दक्षिण भारत राष्ट्रमत

फॉक्सकॉन की बेंगलूरु इकाई ने आईफोन-17 का उत्पादन शुरू

नई दिल्ली/भाषा। ताइवान की दिग्गज इलेक्ट्रॉनिक कंपनी फॉक्सकॉन ने बेंगलूरु स्थित अपने नए कारखाने में आईफोन-17 का विनिर्माण शुरू कर दिया है। सूत्रों ने यह जानकारी दी। यह फॉक्सकॉन की दूसरी सबसे बड़ी विनिर्माण इकाई है।

इस कारखाने में फिलहाल आईफोन-17 को छोटे पैमाने पर बनाया जा रहा है।फॉक्सकॉन पहले से चेन्नई स्थित अपने कारखाने में भी आईफोन-17 बना रही है। कंपनी ने अभी तक इस बारे में आधिकारिक बयान नहीं दिया है। फॉक्सकॉन आईफोन बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी है। चीन के बाहर उसका दूसरा सबसे बड़ा कारखाना बेंगलूरु के पास देवनहल्ली में बनाया जा रहा है, जिस पर लगभग 2.8 अरब डॉलर (25,000 करोड़ रुपए) का निवेश किया जा रहा है। एक जानकार सूत्र ने बताया, फॉक्सकॉन के बेंगलूरु स्थित कारखाने में आईफोन-17 बनना शुरू हो गया है।

एप्पल और फॉक्सकॉन को इस संबंध में भेजे गए ईमेल का कोई जवाब नहीं मिला।

आईफोन-17 का उत्पादन कुछ समय के लिए बाधित हो गया था क्योंकि सैकड़ों चीनी इंजीनियर अचानक वापस लौट गए थे।

हालांकि, फॉक्सकॉन ने इस कमी को पूरा करने के लिए ताइवान समेत कई जगहों से विशेषज्ञों को बुला लिया है।

कई सूत्रों के अनुसार, एप्पल की योजना है कि वह इस साल आईफोन उत्पादन को बढ़ाकर छह करोड़ इकाई करने की है, जो वर्ष 2024-25 में करीब 3.5 से चार करोड़ इकाई था। एप्पल ने 31 मार्च, 2025 को समाप्त वित्त वर्ष में भारत में करीब 22 अरब डॉलर मूल्य के 60 प्रतिशत अधिक आईफोन असेंबल किए थे। कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) टिम कुक ने 31 जुलाई को वित्तीय परिणामों की घोषणा के बाद कहा कि जून, 2025 में अमेरिका में बिके अधिकांश आईफोन भारत से आयातित हैं।

कुक ने दूसरी तिमाही के परिणामों पर चर्चा के दौरान घोषणा की थी कि जून तिमाही में अमेरिका में बिकने वाले सभी आईफोन भारत से भेजे जाएंगे।

दूसरी तिमाही में एप्पल की भारत में आपूर्ति सालाना आधार पर 19.7 प्रतिशत बढ़ गई। इस तरह देश के स्मार्टफोन बाजार में उसकी हिस्सेदारी 7.5 प्रतिशत रही। आईडीसी के अनुसार, जून तिमाही में भारतीय स्मार्टफोन बाजार में चीन की कंपनी वीवो 19 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ सबसे आगे रही।

अत्याधुनिक ड्रोन के इस्तेमाल से यूक्रेन के अग्रिम मोर्चे पर घायलों की निकासी में आ रही कठिनाई

कीव/एपी। पूर्वी यूक्रेन में अग्रिम मोर्चे पर सटीक निशाना साधने वाले ड्रोन के इस्तेमाल के कारण ज्यादा जवानों की मौत हो रही है या वे गंभीर रूप से घायल हो रहे हैं और उन्हें चिकित्सा सेवा भी जल्द नहीं मिल पाती है।

रूस के हमले के शुरुआती महीनों में, घायलों को निकालने वाले वाहन अग्रिम पंक्ति तक पहुंच सकते थे, जिससे उन्हें बचाने का बेहतर मौका मिलता था। अब 'फर्स्ट-पर्सन-व्यू' (एफपीवी) ड्रोन के भारी इस्तेमाल ने अग्रिम पंक्ति से 20 किलोमीटर तक के क्षेत्रों को 'जानलेवा क्षेत्र' में बदल दिया है। चिकित्सकों का कहना है कि अब एफपीवी से ही जवानों के घायल होने या जान गंवाने के ज़्यादातर मामले आते हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के ड्रोन के जरिए सटीकता से हमला करने से पहले लक्ष्य को देखने की सुविधा मिलती है।

यूक्रेन की 59वीं ब्रिगेड की चिकित्सा इकाई के कमांडर बुहोर ने बताया कि एफपीवी के बढ़ते इस्तेमाल ने घायलों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना और भी मुश्किल बना दिया है। उन्होंने कहा, सब कुछ कठिन होता जा रहा है। हमारे काम करने का तरीका बदल रहा है और सुरक्षा का स्तर भी बदल रहा है।

ड्रोन से गिराए जाने वाले विस्फोटकों के प्रभाव से मामूली तौर पर कटने और जलने से लेकर गंभीर घाव, अंग भंग होना, कुछ भी हो सकता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि टुकड़े कहां लगे हैं और उनका आकार क्या है।

यह पूछे जाने पर कि क्या इन परिस्थितियों के कारण घायलों की मृत्यु दर में वृद्धि हुई है, उन्होंने कहा, काफी हद तक। आप कुछ नहीं कर सकते। उन एफपीवी से सब कुछ जल जाता है- सब कुछ, यहां तक कि टैंक भी।

यूक्रेन की 108वीं दा विंची वॉल्व्स बटालियन की उल्फ चिकित्सा सेवा की एनेस्थेसियोलॉजिस्ट डारिना बोइको ने कहा, दूर तक पहुंच सकने वाले ड्रोन की वजह से, घायलों के लिए ही नहीं, बल्कि उन्हें बाहर निकालने वाले कर्मचारियों के लिए भी ख़तरा है। बोइको ने कहा कि इसलिए अब मुख्य कठिनाई उनके परिवहन की है।

बुहोर ने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान अब स्व-सहायता और स्व-निकासी पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है, लेकिन ऐसे 'जानलेवा क्षेत्र' का अर्थ है सैनिक कई दिनों या हफ्तों तक एक ही स्थान पर फंसे रह सकते हैं- खासकर यदि घाव तत्काल जीवन के लिए खतरा न हो। बुहोर 2022 के अंत से पोक्रोवस्क क्षेत्र में काम कर रहे हैं। इस तरह के ड्रोन के इस्तेमाल के कारण सैनिकों को कई बार पीछे सुरक्षित स्थान तक हटने के लिए मजबूर होना पड़ता है। पिछले ढाई वर्षों में, बुहोर और उनकी टीम 17 बार मोर्चे की तैनाती स्थल से स्थानांतरित हो चुकी है।

भाग्यशाली हूं कि मेरा शौक मेरा पेशा बन गया: पवन मल्होत्रा

मुंबई/भाषा। अभिनेता पवन मल्होत्रा का कहना है कि उन्होंने कड़ी मेहनत और सिनेमा के प्रति जुनून के दम पर फिल्म उद्योग में सफलता हासिल की। अभिनेता को ब्लैक फ्राइडे, जब वी मेट और भाग मिल्खा भाग जैसी फिल्मों में उनके अभिनय के लिए जाना जाता है।

मल्होत्रा ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, मैं भाग्यशाली हूं कि जो शौक था वही पेशा बन गया। वर्ष 1982 में मैं मुंबई आया और 40 से अधिक वर्षों से यहां हूं। थिएटर शुरू किया तो अंदाजा नहीं था कि फिल्मों में मुख्य भूमिकाएं निभाऊंगा। मल्होत्रा ने करियर की शुरुआत रिचर्ड एटनबरो की ''गांधी'' में कॉस्ट्यूम विभाग में सहायक के रूप में की और बाद में ''जाने भी दो यारो'' तथा ''खामोश'' जैसी फिल्मों में प्रोडक्शन सहायक रहे। अभिनय की शुरुआत 1984 की ''अब आएगा मजा'' से हुई, जबकि सईद अख्तर मिर्जा की ''सलीम लंगड़े पे मत रो'' ने उन्हें पहचान दिलाई। उन्होंने ''फकीर'' (1998) और ''फौजा'' (2023) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। उन्होंने कहा, मैंने तय कर लिया था कि चाहे हालात अच्छे हों, बुरे हों, मैं यहीं रहूंगा। अगर मुझे बतौर अभिनेता काम नहीं मिलता, तो मैं प्रोडक्शन में लग जाऊंगा, असिस्टेंट बन जाऊंगा या कोई छोटा-मोटा काम कर लूंगा।

स्वागत

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह रविवार को नई दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला के आगमन पर उनका स्वागत करते हुए।

निधि अग्रवाल बनीं टाइगर श्रॉफ की हीरोइन

मुंबई/एजेन्सी

बॉलीवुड और दक्षिण भारतीय सिनेमा की चमक-दमक भरी दुनिया में हर साल हजारों नए चेहरों की भरमार होती है, पर इनमें से सिर्फ कुछ ही लोग अपनी मेहनत, लगन और प्रतिभा के दम पर दर्शकों के दिलों में अपनी खास जगह बना पाते हैं। इन्हीं में से एक हैं अभिनेत्री निधि अग्रवाल, जिनका सफर एक छोटे शहर की लड़की से बड़े स्क्रीन की चमकदार हीरोइन बनने तक बेहद प्रेरणादायक है। उन्होंने 2017 में रिलीज हुई फिल्म 'मुन्ना माइकल' के जरिए फिल्मी दुनिया में कदम रखा था, लेकिन इस डेब्यू के पीछे की कहानी जितनी फिल्मी लगती है, उतनी ही प्रेरणादायक भी है, क्योंकि निधि को इस रोल के लिए 300 से ज्यादा लड़कियों के बीच से चुना गया था।

निधि का जन्म 17 अगस्त 1993 को हैदराबाद में हुआ, लेकिन उनका बचपन बेंगलुरु में गुजरा। हिंदी भाषी मारवाड़ी परिवार में पली-बढ़ी निधि ने बेंगलुरु के विद्याशिल्प अकादमी से अपनी पढ़ाई की शुरुआत की और बाद में क्राइस्ट यूनिवर्सिटी से बिजनेस मैनेजमेंट की डिग्री हासिल की। बचपन से ही उनकी रुचि डांस में थी। बैले से लेकर कथक और बेली डांस तक, निधि ने हर स्टेप को बड़ी मेहनत और लगन से सीखा। ये डांस का हुनर बाद में उनके अभिनय में जान डालता गया।

फिल्मी दुनिया में कदम रखना आसान नहीं होता। निधि के लिए भी ऐसा था। लेकिन जब 2016 में निर्देशक सब्बीर खान और निर्माता विक्की राजानी ने फिल्म 'मुन्ना माइकल' के लिए हीरोइन की तलाश शुरू की, तो देशभर से 300 से ज्यादा लड़कियों ने ऑडिशन दिया। हर लड़की में कुछ खास था, पर निधि की चमक अलग थी। उनकी आत्मविश्वास भरी आंखें, डांस की सहजता और अभिनय की क्षमता ने उन्हें सबमें सबसे अलग और खास बना दिया। कहा जाता है कि वह फिल्म के लिए टाइगर श्रॉफ की भी पसंद थीं।

2017 में वह 'मुन्ना माइकल' में टाइगर श्रॉफ के साथ जोड़ी बनाती हुई नजर आई। यह फिल्म जब रिलीज हुई, तो निधि ने साबित कर दिया कि वह सिर्फ एक खूबसूरत चेहरा नहीं, बल्कि एक दमदार कलाकार भी हैं। फिल्म को मिले-जुले रिव्यू के बीच भी निधि की एक्टिंग और डांस ने लोगों का दिल जीत लिया। उनके इस बेहतरीन डेब्यू के लिए जी सिने अवॉर्ड में उन्हें 'बेस्ट फीमेल डेब्यूटेंट' का अवॉर्ड भी मिला, जिसने उनके करियर की शुरुआत को और भी मजबूत बनाया।

मुन्ना माइकल के बाद निधि ने साउथ इंडियन फिल्मों की ओर कदम बढ़ाया। 2018 में 'सव्यसाची' से उन्होंने तेलुगु सिनेमा में एंट्री की। इस फिल्म के लिए उन्हें साउथ इंडियन इंटरनेशनल मूवी अवार्ड के लिए नामांकित किया गया। बाद में 'आईस्मार्ट शंकर' और 'कलगा थलाइवन' जैसी फिल्मों में उनके किरदारों ने दर्शकों का दिल जीता और बॉक्स ऑफिस पर भी सफलता मिली। निधि का टैलेंट सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं रहा। 2019 में उन्होंने ज्योतिका तंगरी के गाने 'उंगलीच रिंग डाल दे' और बादशाह के 'अहो! मित्रा दी यस है' में अपने अभिनय से सबको प्रभावित किया। 2021 में सोनू सूद के साथ अल्ताफ राजा के गाने 'साथ क्या निभाओगे' में भी उनकी केमिस्ट्री ने खूब तारीफें बटोरीं।

उनकी एक और खास बात यह है कि निधि अपने ब्रांड एंडोर्समेंट्स में भी ईमानदार रही। 2019 में एक फेयरनेस क्रीम का विज्ञापन करने का ऑफर उन्होंने इसलिए ठुकरा दिया कि वह इसे अपने आत्मसम्मान और सिद्धांतों के खिलाफ मानती थीं। हैदराबाद टाइम्स की मोस्ट डिजायरेबल वुमन की लिस्ट में भी निधि ने अपनी जगह बनाई। वह 2019 में 11वें और 2020 में 8वें नंबर पर रहीं।

झांसी की रानी का किरदार निभाकर मुझे एक नया जन्म मिला : कंगना रनौत

अहमदनगर/एजेन्सी

भारतीय जनता पार्टी की सांसद और बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना ने शिरडी साईं बाबा के दर्शन किए। इसके बाद उन्होंने अपनी फिल्म 'मणिकर्णिका: द क्वीन ऑफ झांसी' में झांसी की रानी का रोल निभाने को लेकर अपने अनुभव को साझा किया। एक्ट्रेस कंगना रनौत ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि शिरडी साईं बाबा के दर्शन का मौका मिला। बाबा की आरती की और दर्शन किए। इस क्षेत्र का कायाकल्प पूरी तरह से बदल गया और काफी विकास हुआ। स्वच्छता अभियान यहां पर प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि फिल्म 'मणिकर्णिका: द क्वीन ऑफ झांसी' में झांसी की रानी का रोल निभाकर उन्हें एक नया जन्म मिला। वह झांसी की रानी फिल्म से पुनर्जीवित हुईं। फिल्म इंडस्ट्री ने जो मेरी इमेज खराब कर रखी थी, उसमें भी परिवर्तन आया।

कंगना रनौत ने आगे कहा कि इस फिल्म के जरिए उन्हें देश और आजादी के संघर्ष के बारे में जानने को मिला। स्कूल में छोटे-छोटे बच्चे झांसी की रानी पर कार्यक्रम करते हैं और झांसी की रानी का किरदार निभाते हैं तो यह देखकर बहुत अच्छा लगता है।

हमारी वीरांगनाओं पर और फिल्म बननी चाहिए। उन्होंने लोगों से अपील की कि जब भी आप अपने बच्चों के साथ दिल्ली आएं तो प्रधानमंत्री संग्रहालय में जो लाइट एंड साउंड शो होता है, उसे जरूर देखें। इस लाइट एंड साउंड शो में अलग-अलग वीरांगनों की कहानियां हैं, जिन्हें मैंने आवाज दी है।

नोरा फतेही का सरप्राइज़ विजिट: 'डांस विद नोरा' अकादमी खोलने का सपना हुआ साझा

मुंबई/एजेन्सी

ग्लोबल स्टार और परफॉर्मर नोरा फतेही ने इस हफ्ते अपने फैंस को एक यादगार तोहफ़ा दिया। 'ओह मामा! टेटेमा' सिंगर नोरा अचानक मुंबई के कई डांस स्टूडियोज़ में पहुँचीं और वहाँ मौजूद डांसर्स को उनके लेटेस्ट कोरियोग्राफी पर डांस करते देखकर भावुक हो गईं। उनकी इस अप्रत्याशित मौजूदगी ने साधारण वर्कशॉप को एक जादुई अनुभव में बदल दिया। फैंस के प्यार और उनकी कहानियाँ सुनकर नोरा ने पहली बार यह खुलासा किया कि वह अपनी खुद की 'डांस विद नोरा' अकादमी शुरू करना चाहती हैं। सोशल मीडिया पर इस अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने लिखा यह मुझे जल्द से जल्द अपनी 'डांस विद नोरा' अकादमी शुरू करने के लिए प्रेरित कर रहा है। आप सभी का इतना प्यार देने के लिए शुक्रिया! आप सब से मिलकर मैं खुद को सबसे भाग्यशाली महसूस कर रही हूँ। नोरा के सरप्राइज़ विजिट के दौरान स्टूडियो का माहौल भावनाओं से भर गया। कुछ फैंस की आँखों में आँसू थे तो कुछ की मुस्कान में खुशी छलक रही थी। लोगों को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उनकी फेवरेट स्टार उनके साथ स्टूडियो में डांस कर रही हैं। विशेष बात यह रही कि नोरा ने सिर्फ हाथ हिलाकर या सेल्फी देकर ही अपने फैंस को खुश नहीं किया, बल्कि खुद डांस वर्कशॉप्स में हिस्सा लिया। बच्चों और युवाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर डांस किया और उनके व्यक्तिगत अनुभव भी सुने। यही जुड़ाव उन्हें औरों से अलग करता है।

नोरा का 'डांस विद नोरा' कैंपेन पहले ही बच्चों और युवाओं को अपनी कला दिखाने का मंच दे चुका है। वह न सिर्फ उनकी वीडियोज़ को रीपोस्ट करके उन्हें प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि मौके पर पहुँचकर उनकी मेहनत को सराहती भी हैं। जहाँ एक ओर उनकी गाने 'ओह मामा!

टेटेमा' की धूम दुनिया भर में मची हुई है और आने वाली फ़िल्म 'कंचना 4' से उनका करियर और बुलंदियों पर पहुँचने वाला है, वहीं मुंबई के वे स्टूडियो और वहाँ मौजूद फैंस के लिए असली जादू उनकी सादगी और अपनापन रहा। नोरा फतेही एक ग्लोबल आइकन होते हुए भी ज़मीन से जुड़ी रहती हैं। उनके लिए स्टारडम का मतलब सिर्फ रोशनी और कैमरे नहीं, बल्कि उन फैंस के साथ जुड़ाव भी है, जिन्होंने उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया।

नीरज घेवान की 'होमबाउंड' ने मेलबर्न के भारतीय फिल्म महोत्सव में शीर्ष पुरस्कार जीता

मेलबर्न/भाषा

फिल्म निर्माता नीरज घेवान की फिल्म होमबाउंड ने 'इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न' (आईएफएफएम) 2025 के पुरस्कार समारोह में अपना दबदबा कायम रखा और सर्वश्रेष्ठ फिल्म और सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार जीता। ईशान खट्टर, विशाल जेठवा और जान्हवी कपूर अभिनीत फिल्म ने शुक्रवार रात वार्षिक समारोह में यह पुरस्कार हासिल किया, जो वैश्विक मंच पर भारतीय सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों को सम्मानित करता है। होमबाउंड अपनेपन, विस्थापन और घर लौटने की भावनात्मक जटिलताओं से भरी कहानी है। यह 24 अगस्त को महोत्सव की समापन फिल्म भी होगी। घेवान की दोहरी जीत के अलावा, बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान को भी सिनेमा जगत में उनके दशकों लंबे योगदान के लिए 'एक्सीलेंस इन सिनेमा अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

आमिर ने एक बयान जारी करके कहा, मुझे बहुत छोटी उम्र से ही कहानियां सुनाने का शौक रहा है। फिल्म निर्माण सहयोग की कला है और यह पुरस्कार तथा सम्मान मेरे लेखकों, निर्देशकों, सह-कलाकारों और दर्शकों के बिना संभव नहीं होता, जिन्होंने मुझे कहानियां कहने और उन कई कहानियों का हिस्सा बनने का मौका दिया है जिनका मैं हिस्सा रहा हूं।

अभिषेक बच्चन को फिल्म निर्माता शूजित सरकार की फिल्म 'आई वांट टू टॉक' में उनके अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (पुरुष) का पुरस्कार दिया गया, जबकि गीता कैलासम को अंगम्माल के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। इसे सर्वश्रेष्ठ इंडी फिल्म का पुरस्कार भी प्रदान किया गया। अभिषेक बच्चन ने कहा, मेरे लिए यह भावुक पल है कि मुझे इस मंच पर सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला और एक ऐसी फिल्म में मेरी भूमिका के लिए पहचाना गया जो मेरे लिए बेहद खास है।' बच्चन ने कहा, तीन साल पहले मेलबर्न में इसी महोत्सव में शूजित दा ने मुझे 'आई वांट टू टॉक' में इस भूमिका की पेशकश की थी। शूजित दा ने मुझ पर विश्वास किया कि मैं यह भूमिका निभा सकता हूं और यह भूमिका मेरे पिता और मेरी बेटी को समर्पित है, क्योंकि यह एक माता-पिता की देखभाल और उनके पालन-पोषण के बारे में है।

फिल्म के अलावा सर्वश्रेष्ठ सीरीज का पुरस्कार फिल्म निर्माता विक्रमादित्य मोटवानी की ब्लैक वारंट को मिला। जयदीप अहलावत को पाताल लोक सीज़न दो के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और निमिषा सजयन को डब्बा कार्टेल के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्रदान किया गया। अन्य विजेताओं में अभिनेता-हास्य अभिनेता वीर दास भी शामिल थे, जिन्हें 'डिसरप्टर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, अदिति राव हैदरी को 'डाइवर्सिटी इन सिनेमा' तथा अरविंद स्वामी को 'लीडरशिप इन सिनेमा अवार्ड' से सम्मानित किया गया। पुरस्कारों में लघु फिल्मों को भी शामिल किया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म (भारत) का पुरस्कार धनंजय संतोष गोरेगांवकर की 'कलार पेंसिल्स' को और सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म (ऑस्ट्रेलिया) का पुरस्कार डेविड लियू की 'ड्रिफ्टर्स' को दिया गया।

कोलकाता पुलिस ने विवादास्पद फिल्म 'द बंगाल फाइल्स' के ट्रेलर को जारी किए जाने से 'रोका'

कोलकाता/भाषा

कोलकाता पुलिस ने 1946 के कलकत्ता दंगों पर आधारित फिल्म 'द बंगाल फाइल्स' का ट्रेलर शनिवार को जारी किये जाने से रोक दिया। इसके निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ने यह दावा किया। फिल्म का ट्रेलर दोपहर में महानगर के पांच सितारा एक होटल में प्रदर्शित किया जाना था। कार्यक्रम स्थल पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने इस मुद्दे पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। अग्निहोत्री ने हालांकि आरोप लगाया कि यह लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमला है, क्योंकि सेंसर बोर्ड ने फिल्म को मंजूरी दे दी थी और कलकत्ता उच्च न्यायालय ने इस पर लगे प्रतिबंध पर स्थगन आदेश दे दिया था। उन्होंने कहा कि ट्रेलर के प्रदर्शन को सबसे पहले होटल के एक प्रतिनिधि ने अपराह्न लगभग एक बजे रोका और कहा कि केवल संवाददाता सम्मेलन के लिए अनुमति दी गई थी।

अग्निहोत्री ने कहा, ''यदि होटल प्रशासन ट्रेलर का प्रदर्शन रोकना चाहता था, तो उन्होंने संवाददाता सम्मेलन की अनुमति क्यों दी? ट्रेलर दिखाए बिना किसी फिल्म की प्रेस वार्ता कैसे हो सकती है?'' निर्देशक ने दावा किया कि जब थोड़ी देर बाद ट्रेलर फिर से दिखाया गया, तो अचानक कोलकाता पुलिस के पांच से छह अधिकारी उस बैंक्वेट हॉल में घुस आए जहां कार्यक्रम हो रहा था और उन्होंने प्रदर्शन बीच में ही रोक दिया। फिल्म निर्माता को पुलिस कर्मियों और होटल के कर्मचारियों के साथ बहस करते भी देखा गया। अग्निहोत्री ने संकेत दिया कि सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और ''शीर्ष पर बैठे किसी व्यक्ति'' के इशारे पर ट्रेलर का प्रदर्शन रोका गया। उन्होंने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ पार्टी ने ट्रेलर को बीच में ही रोकने के लिए होटल प्रबंधन पर दबाव डाला।

अग्निहोत्री ने कहा कि 'द बंगाल फाइल्स', जो तथ्यों पर आधारित है और सेंसर बोर्ड की बाधा पार कर चुकी है, को तृणमूल कांग्रेस द्वारा संचालित शासन द्वारा प्रदर्शित होने से रोका जा रहा है। यह पूछे जाने पर कि क्या उनका आशय ममता बनर्जी द्वारा संचालित प्रशासन से है, उन्होंने संवाददाताओं से कहा, ''मैंने केवल शीर्ष स्तर पर किसी व्यक्ति के बारे में कहा है।'' उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''दुख के साथ मैं आपको सूचित कर रहा हूं: आज पश्चिम बंगाल पुलिस ने 'शीर्ष प्राधिकारियों' के आदेश पर 'द बंगाल फाइल्स' का ट्रेलर अवैध रूप से रोक दिया। पहले सिनेमाघरों में, अब एक निजी होटल में भी। हिंदू नरसंहार की सच्चाई से कौन डरता है? और क्यों? टैगोर और विवेकानंद की भूमि में लोकतंत्र मर चुका है।'' अग्निहोत्री ने संवाददाताओं से कहा, ''ट्रेलर अब पूरे देश में देखा जा रहा है, लेकिन चूंकि यह बंगाल पर आधारित है, इसलिए हम इसे यहीं जारी करना चाहते थे। वे नहीं चाहते कि 1946 में बंगाली हिंदुओं पर हुए अत्याचार और गोपाल मुखर्जी जैसे लोगों के संघर्ष को सिनेमा में दिखाया जाये। अगर यह इतिहास का हिस्सा है, तो क्या आप इतिहास बदलना चाहते हैं?''

अग्निहोत्री ने कहा, ''इस कदम के पीछे केवल एक ही कारण हो सकता है, बंगाल को फिर से विभाजित करने की साजिश को नजरअंदाज करना।'' बाद में ट्रेलर को साल्ट लेक स्थित भाजपा कार्यालय में पार्टी पदाधिकारियों और मीडिया के समक्ष प्रदर्शित किया गया। 'द बंगाल फाइल्स' 1940 के दशक के दौरान अविभाजित बंगाल में हुई सांप्रदायिक हिंसा पर आधारित है। यह फिल्म पांच सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होनी है। फिल्म के निर्माता अभिषेक अग्रवाल ने बाद में 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि ''कोई भी ताकत हमें पांच सितंबर को फिल्म रिलीज करने से नहीं रोक सकती।''

RNI No. 58061/93. Regn No.: NP/KA/BGS/2050/2018-2020 Posted at Bengaluru PSO Mysore Road Bengaluru-560 026.

तेरापंथ कन्या मंडल विजयनगर की सदस्याओं ने अहमदाबाद में आयोजित कन्या मंडल के 21वें राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लिया। पूर्व संयोजिका ध्वनि गन्ना ने बताया कि विजयनगर मंडल को नगर स्तर पर संपूर्ण भारत में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है।

विजेता

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

बेंगलूरु जैन टेनिस बॉल क्रिकेट ट्रस्ट द्वारा आयोजित बीजेटीसीटी 'इंडिपेंडेंस कप 2025' का आयोजन किया जिसमें टीम सैफ़ायर ने टीम पैशन को हरा कर फाइनल जीता। मैन ऑफ दि फाइनल आकाश मांडोत, बेस्ट बैट्समैन और मैन ऑफ़ दि सीरीज प्रमोद पोरवाल और बेस्ट बॉलर मनीष जडेजा बने। ट्रस्ट के श्रेयांस कोठारी ने बताया कि इस आयोजन में ट्रस्ट के अनेक सदस्यों का सहयोग मिला।

आत्मा का विश्राम मोक्ष है : साध्वी अणिमाश्री

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। शहर के जयनगर संघ के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ विराजित उपप्रवर्तिनी कंचनकंवरजी की निश्रा में साध्वी अणिमाजी ने कहा कि हर इंसान को निरंतर सुख की अनुभूति होती है या निरंतर दुःख का ही सामना करता है। बल्कि मनुष्य कभी सुख तो कभी दुःख का अनुभव करता है। मन का विश्राम ध्यान व वचन का विश्राम मौन है। तीनों योगों का विश्राम कार्योत्सर्ग है। पेट का विश्राम तपस्या है।

मिथ्यात्व का विश्राम समकित है और पापों का विश्राम सामायिक है। आत्मा का विश्राम मोक्ष है। व्यक्ति चाहता तो मोक्ष है और आकर्षण धन का है। साध्वीश्री दिव्ययशा ने कहा कि भगवान महावीर ने जन-जन के हितार्थ-कल्याणार्थ जो बोध दिया, वह चार प्रकार के गोले अर्थात, मक्खन, मोम, काल और मिट्टी का गोला है। साध्वीश्री ने कहा कि ताप लगते ही मक्खन का गोला अपना अस्तित्व खो बैठता है। इस व्यक्ति का चिंतन होता है कि सामायिक, दया और पौषध आदि करने से समस्या आती है और वह धर्म, आराधना, साधना से दूर हो जाता है।

बालकों के संस्कारों में परिवार और परिवेश की अहम् भूमिका : आचार्य विमलसागरसूरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

गदग। स्थानीय राजस्थान जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ के तत्वावधान में रविवार को पांचवीं जागरण सेमिनार में निरंतर तीन घंटे तक धाराप्रवाह बोलते हुए जैनाचार्य विमलसागरसूरीजी ने कहा कि एकल और संयुक्त परिवार का भी बालकों के मन पर गहरा असर होता है।

माता-पिता और अभिभावकों की मनोवृत्तियां, भाषा, संस्कार और विचार बालकों पर अमिट छाप छोड़ते हैं। वह छाप मरते दम तक भी नहीं मिटती। मनुष्य के सभी संस्कार गत जन्मों के ही नहीं होते। झूठ, जिद्द, गुस्सा, मनमानी, गालीगलौज, चोरी, अनुशासनहीनता, ईर्ष्या, भेदभाव और व्यसन आदि अनेक कुवृत्तियां बालकों के जीवन में दूसरों को देख-देखकर पनपती हैं। परिवार का सात्विक सुसंस्कारी वातावरण और उसकी गौरवशाली परंपराएं बालकों के जीवन-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हर घर की अपनी कुछ गालियां होती हैं और वे बालकों की जबान पर आसानी से उपलब्ध होती हैं। घर में एक-दूसरे के प्रति होते पक्षपात, भेदभाव का भी बालकों पर गहरा असर होता है। अन्याय बालकों को अपराधी बना सकता है। पार्श्व बुद्धि वीर वाटिका के विशाल पंडाल में उपस्थित सोलह से पचास वर्ष तक के एक हजार अधिक युवक-युवतियों को मार्गदर्शन देते हुए आचार्य विमलसागरसूरीजी ने माता-पिता, संतान, परिवार, संस्कार, संपत्ति, सुख-सुविधाएं आदि अनेक जीवनोपयोगी विषयों की तलस्पर्शी चर्चा की। उन्होंने कहा कि गरीबी या अभावग्रस्त जीवन जितना असरकारक नहीं होता, उतना घर के आसपास और समाज का वातावरण बालकों पर प्रभावी होता है। अगर वे गंदे, गलत या बुरे वातावरण के आसपास पल रहे हैं तो उन बालकों की कोमल और अपरिपक्व मानसिकता पर इसके गहरे नकारात्मक प्रभाव स्पष्ट दिखाई देंगे, इसलिए अपना घर सही जगह पर होना चाहिए और पड़ोसी अच्छे होने चाहिएं। वक्त पर अच्छे पड़ोसी ही बहुत काम आते हैं। ङ्गआचार्य विमलसागरसूरीजी ने समझाया कि संवेदना और प्रेम से बालकों को अपने पास लेना चाहिए, उनका स्पर्श करना चाहिए। उन्हें अलग-अलग तरीकों से समझाना और उनमें विश्वास पैदा करना चाहिए।

डराकर बालकों को कमजोर नहीं बनाना चाहिए। बालकों को समय देना, उनके साथ खेलना और आवश्यकतानुसार उन्हें वस्तुएं दिलाना भी उतना ही जरूरी है। उनको घर, समाज, संसार और भविष्य की परिस्थितियों से वाकिफ़ कराना और पूरे परिवार के साथ हिलमिलकर भोजन करना भी बहुत महत्वपूर्ण है। बालकों को अकेले न छोड़ना, बार-बार उन्हें न डांटना तथा उनके मन की बातें जानना भी जरूरी है। संस्कारी परिवारों के आसपास घुलमिलकर रहना तथा बालकों के अच्छे मित्रों का होना भी अपने जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है।

कर्तव्यों का पालन करना ही साधना है : संतश्री ज्ञानमुनि

गुरुदेव की प्रेरणा से संग्रहित पुस्तक का हुआ विमोचन

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। शहर के यलहंका स्थित सुमतिनाथ जैन संघ के तत्वावधान में चातुर्मासार्थ विराजित संत ज्ञानमुनिजी ने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य जब तक जगत में रहे तब तक उसके मन में अभिमान नहीं आना चाहिए। ऐसे ही आज हम भगवान श्रीकृष्ण जैसे एक महापुरुष और उनके गुणों को याद कर रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण गुणवान थे। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म विलक्षण था और विलक्षण ही मृत्यु हुई। जन्म और मरण के बीच जो उन्होंने किया वह सबसे महत्वपूर्ण है। आठ कर्म काटना ही अष्टमी होता है। इसी अष्टमी पर कृष्ण जन्माष्टमी मनाई जाती है। भारतीय संस्कृति के तीन महापुरुषों को हम याद करते हैं, जिसमें भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण और महावीर हैं। भगवान श्रीराम मर्यादापुरुष थे। कृष्ण कर्म योगी थे। तप, तपष्या करने वालों को अच्छा ही फल मिलता है। महापुरुषों की दिव्यता ही अलग होती है। महापुरुष जो होते हैं वह दूसरे के गुणों को ग्रहण करते हैं। श्रीकृष्ण से मनुष्य को अपने कर्तव्यों के बारे में प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने हर तरीके से अपने कर्तव्यों को निभाया। भगवान श्रीकृष्ण बहुत ही विनयवान थे। उनके जीवन से मनुष्य को बहुत कुछ सीखना चाहिए। मनुष्य को भगवान कृष्ण के जीवन से विनय, दोस्ती, बड़ों का आदर और कर्तव्य निभाने के बारे में तो जरूर सीखना चाहिए। ऐसा करने के बाद ही मनुष्य अपने जीवन में बदलाव ला सकता है।ङ्ग

रविवार को समारोह में गुरुदेव ज्ञानमुनि जी के संस्मरण एवं प्रेरणा से संग्रहित यादों का 'उपवन' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। गुरुदेव ने कहा कि 'पाया जितना उतना दिया नहीं, लेकिन जो पाया' वह सब कुछ इस पुस्तक में शामिल है। इस पुस्तक में बहुत सारे महापुरुषों, तपस्वी संतों और महान श्रावकों का उल्लेख है। शांतिलाल बोहरा ने पुस्तक का परिचय दिया। विमोचनकर्ता बाबूलाल रांका और उत्तमचंद रातड़िया थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता रेवतमंल नाहर ने की। अतिथि के रूप में गौतमराज अबानी, पुष्पराज चौरड़िया, राजेश कोठारी वेल्लूर, पदमराज मेहता, शांतिलाल भंडारी, सुनील लोढ़ा, पन्नालाल कोठारी, गौतमचंद लुंकड़, महावीर धोका, शांतिलाल बांठिया, ताराचंद श्रीश्रीमाल और पारसमणि रुणवाल मौजूद थे। मंगलचंद प्रकाशचंद मुणोत गौतम प्रसादी के लाभार्थी थे।

बिना धर्म के जिज्ञासा नहीं होती : आचार्य प्रभाकरसूरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के महालक्ष्मी लेआउट स्थित चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर में चातुर्मासार्थ विराजित आचार्यश्री प्रभाकरसूरीश्वरजी ने अपने प्रवचन में कहा कि संसार की असारता का आभास हुए बिना धर्म की जिज्ञासा नहीं होती और जिज्ञासा हुए बिना धर्म के परिणाम प्राप्त नहीं होते। नींव की शुद्धि और मजबूती के बिना महल खड़ा नहीं किया जा सकता, मूल की शुद्धि बिना फल नहीं मिलता और हृदय की शुद्धि बिना इसमें वस्तु प्रवेश नहीं करती, इसलिए हृदय को शुद्ध बनाओ। संसार में आपको जो चीजें मिली हैं, वे पुण्य के योग से मिली हैं। परमात्मा की भक्ति से ही हमारा पुण्य प्रबल होता है और क्रोध, मान, माया, लोभ, रूपी कषाय अपने आप मिट जाते है इसलिए परमात्मा की भक्ति ही वह माध्यम है जो हमारे आत्मकल्याण के मार्ग को प्रशस्त करता है। भावना से रहित आत्मा कितना भी प्रत्यन करे, वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकती। मोक्ष प्राप्ति के चार प्रमुख मार्ग हैं दान, शील, तप और भाव। दान के साथ दान की शुद्ध भावना, तप करने में शुद्ध भाव और शील (ब्रह्मचर्य) का पालन करने में भी सच्ची भावना होनी चाहिए। जिस तरह हवा के बिना अच्छे से अच्छा जहाज भी समुद्र में चल नहीं सकता। उस तरह ही अच्छे से अच्छा चतुर साधक भी भाव के बिना संसार सागर को पार नहीं कर सकता। नाव को चलाने में जैसे पवन कारक है, वैसे ही धर्म रूपी साधना भावरूपी नाव से ही पार की जा सकती है। लोग मंदिर में जाकर मूर्ति को पूजते हैं। हम जो कुछ क्रिया करते हैं, उसका फल भावना के अनुसार ही हमें मिलता है। जिसकी जैसी भावना होती है उसी प्रकार की सिद्धि मिलती है।

मलेशिया धार्मिक यात्रा 5 सितंबर से

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। तिरुपति के सिद्धेश्वर ब्रह्मर्षि गुरु जी का सान्निध्य व प्रतिष्ठाकारक मनोज हरण के मार्गदर्शन में मलेशिया के कुआलालम्पुर में पर्युषण महोत्सव एवं परमात्मा प्रतिष्ठा का दो दिवसीय आयोजन 5 सितम्बर से होने जा रहा है। इस पर्व का साक्षी बनने के लिए भारत से जैन मित्र फाउंडेशन द्वारा जैन दोस्ती फाउंडेशन के सहयोग से 450 सदस्यों का हवाई यात्रा संघ मलेशिया जाएगा।फाउन्डेशन के संस्थापक पियूष सोलंकी, खेतन सुराना, मितेश सुराना एवं महेंद्र कटारिया हैं। इस यात्रा के दौरान सिंगापुर, थाईलैंड एवं मलेशिया देशों का दौरा होगा जो धार्मिक यात्रा के साथ पर्यटन भी होगा।

प्रसन्न दुगड़ बने सुसवाणी माता भक्त मंडल के नए अध्यक्ष

बेंगलूरु/दक्षिण भारत । स्थानीय सुसवाणी माता भक्त मंडल की चतुर्थ वार्षिक साधारण सभा गोड़वाड़ भवन में आयोजित हुई। अध्यक्ष जितेंद्र दुगड़ ने सभी का स्वागत किया।

सचिव नवीन सुराणा ने विगत वर्ष में आयोजित कार्यक्रमों एवं विगत बैठक की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष प्रसन्न दुगड़ ने आय व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। आने वाले वर्ष के लिए सर्वसम्मति से अशोक सुराणा को अंकेक्षक नियुक्त किया गया। आगामी दो वर्षीय कार्यकाल के लिए सर्वसम्मति से प्रसन्न दुगड़ को नया अध्यक्ष मनोनीत किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष जितेंद्र दुगड ने नए अध्यक्ष का सम्मान किया। बिपुल दुगड़ ने धन्यवाद दिया।

सरलता, सादगी और सौहार्द से जीवन जीएं : साध्वी धैर्याश्री

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। शहर के श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, विल्सनगार्डन में रविवार को रक्षा बंधन पर प्रवचन देते हुए साध्वी आगमश्री ने कहा कि सादा जीवन उच्च विचार व्यक्ति को आत्मा से परमात्मा बनने के मार्ग पर आगे बढ़ाता है। जीवन में जितनी सरलता होगी, व्यक्ति उतना ही अधिक प्रगति करता चला जाएगा। उन्होंने कहा कि हमें सरलता, सादगी, सौहार्द, करुणा एवं मधुर व्यवहार से जीवन निर्वाह करना चाहिए। इन गुणों के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की अशांति को शांत कर सकता है और संसार से भी सामंजस्य बना सकता है। हमें अपने जीवन को केवल सांसारिक उपलब्धियों तक सीमित न रखते हुए, आध्यात्मिक साधना और आत्मकल्याण के उद्देश्य से जोड़ना चाहिए। साध्वी आगमश्री ने कहा कि हमें कर्मयोगी श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर धर्म, कर्तव्य और आत्मिक अनुशासन के मार्ग पर चलना चाहिए।

हमें गौमाता का सम्मान करना चाहिए। गौ सेवा से जीवदया और अहिंसा के भाव पुष्ट होते हैं। वासुदेव श्री कृष्ण ने सुदामा के साथ मैत्री का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया है जो सारे संसार में मैत्री का आदर्श है। मैत्री धन से नहीं, भावों की उच्चता से नापी जाती है। बिना किसी भेदभाव के मित्रों से प्रेम और सच्ची मित्रता निभाना आवश्यक है। मित्रता में राग नहीं, सहयोग और आत्मीयता होनी चाहिए। जैन धर्म में मैत्री भाव' को बहुत महत्व दिया गया है।

यह सभी जीवों के प्रति समभाव रखने की भावना है। सभा में गंगानगर संघ के संरक्षक अमरचंद गुंदेचा, महावीर गुंदेचा, कैलाशचंद गन्ना आदि उपस्थित थे। संघ के चेयरमैन मीठालाल मकाणा ने स्वागत किया। अध्यक्ष नेमीचंद भंसाली ने आभार व्यक्त किया। मंत्री सज्जन बोहरा ने संचालन किया।

विजयनगर कन्या मंडल ने प्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त किया दूसरा स्थान

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। तेरापंथ कन्या मंडल विजयनगर की सदस्याओं ने अहमदाबाद में आयोजित कन्या मंडल के 21वें राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लिया। पूर्व संयोजिका ध्वनि गन्ना ने बताया कि विजयनगर मंडल को नगर स्तर पर संपूर्ण भारत में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है । सह संयोजिका प्रियल बाबेल एवं प्रभारी मोनिका गांधी ने कार्यक्रम की जानकारी दी। पुरस्कार प्राप्त करने के बाद कन्या मंडल ने साध्वी संयमलताजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। पूर्व अध्यक्ष मंजू गादिया, कार्यक्रम में महिला मंडल की पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं आंध्र तेलंगाना की प्रभारी वीणा बैद, अध्यक्षा महिमा पटावरी, कन्या मंडल संयोजिका खुशी मांडोत एवं प्रभारी खुशी कोठारी ने कन्या मंडल को बधाई दी।

केएमएस महिला विंग की अध्यक्ष बनीं सुषमा व सचिव बनीं निशा

बेंगलूरु/दक्षिण भारत। कर्नाटक मारवाड़ी समाज (केएमएस) की महिला विंग की वर्ष 2025-27 की नई कार्यकारिणी समिति का गठन हुआ जिसमें समाज के अध्यक्ष प्रवीन तुलस्यान ने सभी का स्वागत किया तथा नई कमेटी की घोषणा की। नई कमेटी में सर्वसम्मति से सुषमा चांदगोठिया को अध्यक्ष, वंदना तुलस्यान को उपाध्यक्ष, निशा अग्रवाल को सचिव तथा नेहा बैरोल्या को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। महिला विंग की टीम में कांता बांका, मेघा अग्रवाल, रश्मि तुलस्यान, सुनीता नठानी, पूनम अग्रवाल, मीनू सिंघानिया, स्वाति बलोडिया, शीतल जिंदल, किरण गिंदोरिया और शालू तुलस्यान को शामिल किया है। सचिव मोहित तुलस्यान ने संचालन किया।

तप कर्मों की निर्जरा का मार्ग है : साध्वी इन्दुप्रभा

दीर्घ तपस्वियों का संघ ने किया सम्मान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। स्थानीय श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ अलसूर के तत्वावधान में महावीर भवन में तप महोत्सव प्रसंग पर आयोजित प्रवचन में साध्वी इंदुप्रभाजी ने कहा कि इस जगत में ऐसा कोई कार्य नहीं जो दृढ़ संकल्प से पूर्ण न होता हो। आज युवा पीढ़ी कुव्यसनों का शिकार होती जा रही है। धर्म पर श्रद्धा कम पड़ती जा रही है। ऐसे में युवा तपस्वी का तप आशा और उम्मीद का संचार करता है। वायु से भी ज्यादा शक्ति युवा में होती है। इस समारोह में सरोजदेवी फूलफगर ने अलसूर में पहली बार 40 उपवास का दीर्घ तप संपन्न किया तथा उन्हीं के पुत्र प्रफुल्ल फूलफगर ने 31 उपवास कर मासखमण तप संपन्न किया। इस अवसर पर अपने प्रवचन में साध्वी वृद्धिप्रभाजी ने कहा कि तप कर्मों की निर्जरा का मार्ग है। तप, तन व मन की शक्ति अनुसार स्पर्धा भावना से हट कर करना चाहिए। तप में सम्मान अथवा परलोक के सुख की कामना नहीं रखनी चाहिए। तप संसार में समृद्धि की कामना से अथवा शरीर सौंदर्य की भावना से भी नहीं करना चाहिए। संघ के मंत्री अभयकुमार बांठिया ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। दोनों तपस्वियों का संघ की ओर से सम्मान किया गया। इस अवसर पर साध्वी श्री निपुणप्रभाजी एवं रिद्धिप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया। अध्यक्ष धनपत राज बोहरा ने अतिथियों का स्वागत किया। साध्वी शशिप्रभा जी ने मंगल पाठ सुनाया।

बीजेएस मैसूरु द्वारा 65 प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान

ललितकुमार कोठारी को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड'

मैसूरु/दक्षिण भारत। शहर के भारतीय जैन संघटना(बीजेएस) के तत्वावधान में रविवार को प्रतिभा पुरस्कार-2025 कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें वर्ष 2025 की विभिन्न परीक्षाओं में 85 प्रतिशत से ज्यादा अंक पाने वाले, उभरते हुए नए प्रोफेसर, वकील एवं कराटे के कुल 65 प्रतिभावान विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। जीवदया एवं मानवसेवा में समर्पित 78 वर्षीय ललितकुमार कोठारी को जीवन पर्यन्त उपलब्धि 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्रदान किया गया। समारोह में चंद्राबाई संजयकुमार नवीनकुमार श्रीश्रीश्रीमाल एवं अनिलकुमार केतनकुमार गन्ना को उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। शाखाध्यक्ष राजन बाघमार ने सभी का स्वागत किया। निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण लुंकड़ सहित कुछ पदाधिकारियों ने सम्मान पाने वालों का परिचय दिया। मुख्य सचिव दीपक बोहरा ने संचालन किया। सचिव राजेंद्र देसरला ने धन्यवाद दिया। इस अवसर पर बीजेएन मुख्य, महिला व युवा शाखा के पदाधिकारी उपस्थित थे।

पीएमके की विशेष बैठक ने रामदास के संस्थापक अध्यक्ष बने रहने का संकल्प जताया

विल्लुपुरम। पीएमके के शीर्ष नेतृत्व में सत्ता संघर्ष के बीच पार्टी की विशेष आम परिषद ने रविवार को संकल्प जताया कि इसके संस्थापक डॉ. एस रामदास पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष बने रहेंगे। डॉ. रामदास और उनके बेटे डॉ. अंबुमणि के बीच पिछले कुछ महीनों से खींचतान चल रही है, दोनों अपनी-अपनी मर्जी से पदाधिकारियों की नियुक्ति और बर्खास्तगी कर रहे हैं। वरिष्ठ नेता और पदाधिकारी अपने-अपने नेताओं का समर्थन कर रहे हैं। बताया जाता है कि पिता-पुत्र के बीच बातचीत नहीं होती और इन परिस्थितियों में पट्टाली मक्कल काची (पीएमके) की विशेष आम परिषद की बैठक यहां डॉ. रामदास की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में पूर्व अध्यक्ष और पेन्नागरम विधायक जीके मणि द्वारा पेश प्रस्ताव में कहा गया कि डॉ. रामदास पीएमके के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में कार्य जारी रखेंगे। सदस्यों ने जोरदार तालियां बजाकर और जयकारे लगाकर प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित कर दिया।

Printed& Published by Devendra Sharma on behalf of owners M/s. New Media Company, 6/4 , Ist floor, Cantonment station road, Bengaluru-51 and printed at Dinasudar Printing Division, 116, Queens Road, Bengaluru-560052. **Editor-Shreekant Parashar**,
(*Responsible for selection of news under PRB Act.) Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.
HEAD OFFICE : DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT, New Media Company, 6/4, Cantonment Station Road, Bangalore 560051. Editorial : 080-25363030 / 9945488003. For Advertisement : 9945488002 - email : news@dakshinbharat.com